



बिदेह २६ म अंक ०९ मार्च २००९ (वर्ष २ मास १३ अंक २६)



एहि अंकमे अछि:-

१.संपादकीय संदेशे

१. गद्य

१.१. कथा-सुभाषचन्द्र यादव-कृती

१.२. भाग बौ (संपूर्ण मैथिली नाटक)-नेथिका - रिभा बानी (थागाँ)

१.३. सुशीत सा- मिथिला मंथन

१.४. खा ओ माबनि गेनि ! - रूषेश चन्द्र नान

१.५. जयकाब्र मिश्रपव विशेष ए.डॉ. गंगेश गुंजन २. रिद्या मिश्र

१.६. रिरचना: सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रह- रूनेत-रिगड़त गजेन्द्र

ठाकुर हेलीक संदेशे डा. चन्देश्वर शहा

३. पद्य



३.१. रसंती दोहा- रुमाव मनोज कथुप

३.२. सतीशे चन्द्र ना- हभव सुतंत्रता

३.३. ज्याति- एक नाकरी चाही

३.४. जंगन दिस ! - कपेशे रुमाव ना सांथ

३.५. पंकज पवाशिव -समयोर्मि

३.६. सुरोध ठाकुर-हम गामेमे बहरंग

४. रानाना हुते-मध्य-प्रदेशे यात्रा खा देरीजी- ज्याति ना चौधरी

५. भाषापक वचना-लेखन - पङ्गी डाठारैस (थागाँ), [मानक मैथिली, [रिदेहक मैथिली-अंग्रेजी खा अंग्रेजी मैथिली कोष (गठबनेठपव पहिन रेव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्वव आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.]

६. VI DEHA FOR NON RESIDENT MAI THILS (Festivals of Mthila date-list)-

The Comet-English translation of Gajendra Thakur's Maithili Novel Sahasrabadhani by jyoti

रिदेह ई-पत्रिकाक सबठा पुवान अंक (तिवहता खा देरनागरी दू निपिमे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक नेन नीचाँक निकपव उपनछ अछि । All the old issues of Videha e journal (in Tirhuta and Devanagari versions both) are available for pdf download at the following link.

रिदेह ई-पत्रिकाक सबठा पुवान अंक तिवहता खा देरनागरी दू कपमे



[Vi deha e journal 's all old issues in Tirhut a and Devanagari versions](#)

१.संपादकीय

मैथिलीक सभसँ प्रतिष्ठित श्रौंथ समान 2009 क जेन श्री बाजमोहन नारकै स्रान्ति फाँडेशन द्वारा पठनाक रिद्यपति भरणमे 22 फरवरी 2009 कें 4 रजे अपवाहसँ शुक भेन कार्यक्रममे देन गेन । एहिमे स्रुति चिन्ह आ एक नाथ ठाका देन जागत अछि । श्री भूमनाथ ना, उदय नारायण सिंह, रिजय रंहाद्व सिंह, अलय नारायण सिंह आ देव बास गणमान्य लोक एहि अरसवपव उपस्थित छुनाह ।

रेडियो कार्यक्रम हेल्ला मिथिना, जकवा रिषयमे रंहुतोगोठेक स्रनार बहेत छननि जे ङा सभतवि स्रनन जा सकरौक कोनो स्रौत धवारी । से धारेन्द्रजी सहर्ष जानकारी देनथि जे आरं ङा कार्यक्रम गन्ठबनेठपव अननागन उपनह्छ भुं गेन अछि ।

सामाजिक तथा सांस्कृतिक रिषयरसुपव केन्द्रित हेल्ला मिथिना कार्यक्रम प्रह्लेक शिनि क२ नेपानी समयान्नुसाव बाति १.३० रजेसँ ११ रजेधवि आ बाजनीतिक रिषयरसुपव केन्द्रित टोरैठिया कार्यक्रम प्रह्लेक सोम क२ बाति १० सँ ११ रजेधवि प्रसावण होगत छेक । स्रवणीय अछि जे नेपानी समय भारतीय समयसँ १३ मिनठ पाछाँ अछि । ङा कार्यक्रम गन्ठबनेठपव www.kfn961.com पव स्रनन जा सकैत अछि । शिनि दिन हम एकवा स्रननहूँ रिना कोनो रारधानक ।

दिनाक 16.02.2009 कें मैथिली मंडनक तन्नारधान मे 'मैथिली हरा लेखन दशा आ दिशा' रिषय पव शहीद भगत सिंह काँनेज, नङा दिनी मे एक ठा संगोष्ठीक आयोजन कयन गेन । एहि अरसव पव देशेक रिभिन्न भाग स' आयन ठेठका पीठीक स्रिषय भागीदारी बहन । रंनावस से आयन 'नरतुबिया' केव संपादक अकषात्त, कठिहाव (रिहाव) से रोहित ना, दिनी से अनोक वंजन, मिथिलेशे ह्रमाव बाय, ह्रिबदोस, धर्मव्रत चौधरी, देरांथ रसे, सेतु ह्रमाव रमा श्रुत्त रङा छुनाह । आँडियो कोन्फ्रेंसिंग के जविये गाजियाराद से मैथिली आ हिंदीक प्रख्यात कथाकार – संपादक अननकांत (गौबीनाथ) आ सहवसा स चर्चित हरा कथाकार – करि अथिन आनंद सभा स' जूडऱेथ. संगोष्ठीक संचानन हरतम वचनाकार ह्रमाव सौवभ केनथि ।

संगहि "रिदेह" कें एखन धवि (१ जनरवी २००५ सँ २१ फरवरी २००९) ११ देशेक १३५ ठामसँ १,७०,३११ रेंव देखन गेन अछि (गूगल एनेनेठिक्ल डाठा)– धन्यवाद पाठकगण ।



अपनेक बचना आ प्रतिधियाक प्रतीकामे ।



गजेन्द्र ठाकुर, नग्रा दिल्ली । फोन-09911382078

ggaj_endra@videha.co.in ggaj_endra@yahoo.co.in

१.संदेश

१.श्री प्रा. उदय नावायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए बहन छी तकर चवचा एक दिन मैथिली भाषाक गतिहासमे होएत । आनन्द भए बहन अछि, ङा जानि कए जे एतेक गोठ मैथिल "रिदेह" ङा जर्नलकेँ पढाि बहन छथि ।

२.श्री डाँ. गंगेशि गुजन- एहि रिदेह-कर्ममे नागि बहन अहाँक सम्वदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत बंग, गतिहास मे एक ठा रिशिष्ठ, हवाक अध्याय आबंभ कबत, हमबा रिश्वास अछि । अशेष शुभकामना आ रँधागक सम्व, सम्वह ।

३.श्री वामश्रिय ना "वामबंग"(आरँ सुर्गीय)- "अपना" मिथिनासँ संरंधित...रिषय रसुसँ अरगत भेनहँ । ...शेष सभ हूशेन अछि ।

४.श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, साहित अकादमी- गंठबनेठ पब प्रथम मैथिली पाश्चिक पत्रिका "रिदेह" केव नेन रँधाङा आ शुभकामना स्वीकार कक ।

५.श्री प्रहल्लकमाव सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाश्चिक पत्रिका "रिदेह" क प्रकाशिनक समाचार जानि कनेक चकित हूदा रँसी आलादित भेनहँ । कानचकेँ पकड़ि जाहि दूबदृष्टिक परिचय देनहँ, ओहि नेन हमब मंगनकामना ।



७.श्री डॉ. शिरप्रसाद यादर- ङा जानि खपाव हर्ष भए बहन खड्डि, जे नर सूचना-फ़ासुतिक स्केत्रमे मैथिली पत्रकाबिताकेँ प्ररेशे दिखएरौक साहसिक कदम उठाउन खड्डि । पत्रकाबितामे एहि प्रकारक नर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "रिदेह"क सहनताक शुभकामना ।

१.श्री आद्याचरण मा- कौनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशिन- ताहमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशिनमे के कतेक सहयोग कबताह- ङा तह भरिषा कहत । ङा हमब ++ रर्षमे १३. रर्षक खनुभर बहन । एतेक पैघ महान यत्नमे हमब श्रेष्ठापूर्ण खाहति प्राप्त होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।

+श्री रिजय ठाकुर, मिशिगन रिश्वरिद्यालय- "रिदेह" पत्रिकाक खंक देखनहुँ, सम्पूर्ण ठीम रंधाङ्क पात्र खड्डि । पत्रिकाक मंगन भरिषा हेतु हमब शुभकामना स्वीकार कएन जाओ ।

६. श्री स्वभाषचन्द्र यादर- ङा-पत्रिका 'रिदेह' क रौरेमे जानि प्रसन्नता भेन । 'रिदेह' निबन्ध पन्नरित-पुष्पित हो खा चतुर्दिक खपन स्वर्गध पसावय से कामना खड्डि ।

१०.श्री मैथिलीपत्र प्रदीप- ङा-पत्रिका 'रिदेह' केब सहनताक भगरतीस कामना । हमब पूर्ण सहयोग बहत ।

११.डॉ. श्री भीमनाथ मा- 'रिदेह' गन्ठबनेठ पब खड्डि तै 'रिदेह' नाम उचित खब कतेक कपेँ एकब रिरवण भए सकैत खड्डि । खाङ-काल्हि मोनमे उद्ग बहत खड्डि, झुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देर ।

१२.श्री वामभरोस कापड़ा भ्रमब, जनकपुरवधाम- "रिदेह" आँननागन देखि बहन छी । मैथिलीकेँ खनुबर्षिष्टीय जगतमे पहुँचनहुँ तकबा नेन हार्दिक रंधाङ्क । मिथिला बने सभक संकनन खपूर् । नेपानोक सहयोग भेठत से रिश्वास कबी ।



१३. श्री बाजनन्दन नानदास- रिदेह ई-पत्रिकाक माध्यमसँ रँड नीक काज कए बहन छी, नातिक एहिठाम देखनहूँ । एकव रार्षिक थक जखन प्रिष्ठ निकानरँ तँ हमबा पठायरँ । कनकत्रामे रँहूत गोठेकेँ हम सागठक पता निखाए देने छियन्हि । मोन तँ होगत थछि जे दिन्नी थारि कए थशीरदि दैतहूँ, झुदा उंमव थारँ रँशी भए गेन । शुभकामना देशे-रिदेशीक मैथिनकेँ जोडरँक नेन ।

१४. डॉ. श्री प्रेमशंकर सिंह- थहाँ मैथिलीमे गँठबनेठपव पहिन पत्रिका "रिदेह" प्रकाशित कए थपन थद्धत मातृभाषानुवागक पविचय देन थछि, थहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुवागसँ प्रेरित छी, एकव निमित्त जे हमव सेराक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी । गँठबनेठपव थद्यापात पत्रिका देखन, मन प्रफुल्लित भ गेन ।

१. गद्य

१.१. कथा-सुभाषचन्द्र यादर-कृती

१.२. भाग रौ (संपूर्ण मैथिली नाटक)-नेथिका - रिभा बानी (थागाँ)

१.३. सुशांत सा- मिथिला मंथन

१.४. था ओ माबनि गेनि ! - रँषेश चन्द्र नान

१.५. जयकान्त मिश्रपव रिशेष १.डॉ. गंगेशी गुंजन २. रिद्या मिश्र

१.६. रिरेचना: सुभाषचन्द्र यादरक कथा संग्रह- रँनेत-रिगडँत गजेन्द्र
ठाकरुव होनीक संदेशी डा. चन्द्रेशीरव शीह



कथा

स्वभाषचन्द्र यादर-कृती



चित्र श्री स्वभाषचन्द्र यादर ढ्याकावः श्री साकेतानन्द

स्वभाष चन्द्र यादर, कथाकाव, समीक्षक एरं खनुरादक, जन्म ०३ मार्च १९४५, मातृक दीरानगर्ज, सुपौनमे । पेतृक स्थानः रैनरौ-मेनाही, सुपौन- मधुर्नरी । खावन्तिक शिक्षा दीरानगर्ज एरं सुपौनमे । पठना कांनेज, पठनासँ री.ए. । जराहवनान नेहक रिश्रिरिद्यानय, नगर्ज दिल्लीसँ हिन्दीमे एम.ए. तथा पी.एह.डी. । १९५२ सँ अध्यापन । सम्प्रतिः अध्याप्क, स्नातकोत्तर हिन्दी रिभाग, भूपेन्द्र नावायण मंडन रिश्रिरिद्यानय, पश्चिमी पबिसव, सहबसा, रिहाव । मैथिली, हिन्दी, रँगना, संकृत, उर्दू, अंग्रेजी, स्पानिश एरं फ्रेंच भाषाक त्रान ।

प्रकाशिनः घवदेथिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पठना, १९५३, हानी (अंग्रेजीसँ मैथिली खनुराद), साहित् अकादमी, नगर्ज दिल्ली, १९५५, रीछन कथा (हरिमोहन न्माक कथाक चयन एरं भूमिका), साहित् अकादमी, नगर्ज दिल्ली, १९९९, रिहाज्जि आँ (रँगना सँ मैथिली खनुराद), किस्सन संकप्प नोक, सुपौन, १९९३, भावत-रिभाजन ओव हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आनोचना), रिहाव वास्त्रभाषा पबिसद, पठना, २००१, बाजकमन चौधरी का सहब (हिन्दी जीरनी) सावशि प्रकाशिन, नगर्ज दिल्ली, २००१, मैथिलीमे करीर सतुवि ठी कथा, तीस ठी समीक्षा आ हिन्दी, रँगना तथा अंग्रेजी मे अनेक खनुराद प्रकाशित ।

भूतपूर्व सदस्यः साहित् अकादमी पवामर्श मंडन, मैथिली अकादमी कार्य-समिति, रिहाव सबकावक सांस्कृतिक नीति-निर्धरिण समिति ।

कृती

भोव धवि पता नहि चनन । ओ वातिये भइ गेन छन । उठनाक कनेक कानक पछाति नृगी पव नजवि गेन । कहियो कहियो सपना देखनाक रौद भइ जागत छैक, तेहने नागन । नृगी दू तीन ठामसँ सूथिकेँ कइ । भइ गेन छनैक । सपना पव गौव कयनाक रौदो कोनो ओहन सपना मोन नहि पडन । ओहना ओकवा भेनापव निन्न खूजि जागत छैक । निन्न वाति खन नहि खूजन छन । तँग कनेक आश्चर्य तखन धवि रैनन बहन जखन धवि ठेहन पव नजवि नहि गेन । पहिनो रैव एहिना भेन छन । सियाह दाग उभवनाक रौद पानिक गिबर आ हेंव एकठाँ पेंघ मन घर



।

ओहि रैव दर्द नहि भेन छन । पपड़िक कैंक ठी तह जमि क२ उंखड़ित
गेलैंक आ कबीर सप्राहक भीतरे ठीक भ२ गेलैंक ।

बुंगी पव पडन दागकें हम बुरकैत बहनहूँ । हम नहि चाहित छनहूँ नोक एहन
ओहन पूछि देख्य ।

दू-तीन रँजे धवि हमव एकठा दोस्तु खारि गेन । ओ हमवा संग न२ क२ हठिया
जेरौक जिद कवय नागन जे पछिना किछु दिनसँ हपुामे दू रैव नगैत छनैक ।
ओहि ठाम ग्राम पचायत दिससँ फ़्शतीक आयोजन होगत छनैक । हठियाक प्रगतिक
सभ ठी दारोमदाव फ़्शतये पव निर्भव करैत छनैक । नोकक एहन धावणा रनि गेन
छनैक । आ रौदमे मानूम भेन जे हठिया खारि कवरा नैन गामक नोकक रीच
थेतक गाछ नैन एकठा पैघ फ़्शती भ२ चूकन छनैक ।

फ़्शती रँड दिनचस्प आ मजेदाव छनैक । कगएक ठी जोड़ामे गौठक एहन
निकनिये खरैत छनैक जकव कनारौजी पव नोक थपड़ी पाड़ित छन । जनी
जातियो के एकाध नुंड मर्द सभ सँ फ़्शक बहरौक कोशिशि करैत फ़्शतीक मजा
न२ बहन छनैक । फ़्शती करैत-करैत एक ठी जोड़ । आगाँ रैसन नोक सभ पव
खचानक खसि पडनैक । नोक पाछु दिस पड़ाय नागन । हमव धान दोसव दिस
छन । समय पव सारधान नहि भ२ सकनहूँ । ठेहनपव जोवसँ चोष्ट नागि गेन आ
हम खसित-खसित रचनहूँ । हम चिकबिक२ भीडकें गवियार२ नगनहूँ । कपड़ । खवाप
भ२ गेन छन । घारसँ खून रैत छन । दोस्तु महान्भूति देखोनक आ हेन्थ
सेंठव पव चनरौक स्मारदेनक ।

'एखन का हेतैक ?' - आ पुछैत हमव सभठा तामस हेन्थ सेंठव पव केन्द्रित
भ२ गेन । ओ सेंठव रँह बहत छनैक । दू ठी कर्मचारी छनैक, जे सप्राहमे
कोनो एक दिन चन खरैत छनैक आ हेव खपन खपन गाम । जकवतमद नोक
कें भवि सप्राह हेन्थ सेंठवक चक्रव नगर२ पड़ित छनैक किएक तँ ओ सभ कहियो
मिनिष्ठवक आकस्मिक दौड़ । जकाँ खारि सकैत छनैक ।

आगयो हम ओकव खूजन बहरौक उमेद न२ क२ नहि चनन छनहूँ । तँग ताना देखि
रैसी निवाशा नहि भेन । सेंठवक उपयोगितापव गौव करैत का नकड़िक रौर्ड,
जे सेंठवक अस्तित्वक प्रमाण छनैक, कें उंनठि देने छनैक ।

हमसभ घुबि बहन छनहूँ तखने देरौनक पाछुसँ कोनो चीज खसरौक खाराज खायन ।



एक ठाँ छौड़ । घब नइ जेरौ नैन ञ्ठ जमा कइ बहन छन । छौड़ । पहिने कनेक सकपकायन, हेब सम्हवि के दाँत चियारैत सहाग देरै नगन ।

घारसँ खूनक रँहरँ रँल्ल भइ गेन छनैक , झुदा नस हूनय नागन छन । साँम धवि माथमे एकठाँ भारीपनक खन्नभर हखय नागन । देह ठूँठय नागन जेना रूँखाव खयरौसँ पहिने होगत छैक । हेब कँपकँपी शुक भइ गेन । हम सीबक ओढ़ि रिँछोनपव पसवि गेनहँ । दोस्तु खखनो घूब नग रँसने छन । हेब खारो नोकसभ खारि गेन छनैक । हुनका सभक रौँच कोनहुँ गप्प कतहुँ शुक भइ जागत छनैक । कनेक पहिने हमव घारक राँत शुक भेन छनैक आ खारि सँठेबक पछावी चनइरना पानिठिक्क पदफास भइ बहन छनैक । रँसी हल्ला-खल्लाक कावणे हुनका सभपव हम खौँमाय नागन छनहँ । हम खपन मूँड १ सीबक तब कइ नैनहँ आ काछसँ डुपव रँनन गिनैठी ठैरै नगनहँ ।

भोरे उँठनापव ताजगीक खन्नभर भेन । घारपव कपड़ १ सँठि गेन छनैक । घार कान्हिअ सन ताजा छनैक । छौँठ भाय तकनीह दिया पृँछिकेँ चनि गेन । छौँठ भाय मायसँ घारक मादे किछु नहि कहने छने । रँता देने बहिँते तँ माय परेशान भइ कगएक रँव हमवा नग खारि गेन बँहत । ओना हम घारकेँ नइ कइ कनेको चिन्तित नहि छनहँ । सोचि नेने छनहँ जे पहिन रँव जकाँ सहजे ठीक भइ जेतेक । कपड़ १पव दाग उँभवि खरैत छनैक आ ओगपव माछी भिनकइ नगेत छनैक । हम मात्र खरिसँ परेशान बही ।

दूपहव धवि खड़ १स-पड़ १सक नोकसभ दाग देखि पृँछताछ कयनक । हमवा फेमिक कपसँ घारक पूँवा हुनिया दिखय पडन । नोकसभ एहने स्रुभाररना घारक कगएक ठाँ दृँष्टान्तु देनक । घारसँ सँल्लह रयजि सभक पूँवा खिसा सुनौनक हेब खपन खपन खन्नभरक खन्नकून आ प्रमाँषित निदान रँतौनक । किछु सहाब्रुँति प्रकँठ कयनक , किछु कँ घृँणा भेने आ किछु तँठसुँ भार नेने चनि गेन । खपनासँ छौँठ उँमिबक कगएक गोठेकेँ हम ठाँवि देनिये ।

खागत कान हमव छौँठ भाय संगहि रँसि गेन । एक तेहाग हिस्सा आ नेरौ धवि एक ठाँ दाग हेब उँभवि खयनैक आ माछी नागय नगनैक । छौँठ भायक नजवि प्रल्लेक खाध मिनठपव ओहीठाम चन जागत छनैक । कनेक कान राँद ओकव खेरौक गति एकदम मंद पड़ि गेने आ हमवा रँमायन जे ओकवा बद्द भइ जेते । हमवा पछतारा भेन जे ओ किएक हमवा संगे रँसि गेन । हम निर्णय नैनहँ जे घार बहरौ धवि एहन समय संगे नहि रँसैरँ । ओ रँड्ड झुँशिकनसँ ओहि भारकेँ मेँठेउनक । हेब ठँड यन खामेय सुबमे होमियोपेथ डाकँठव नग जेरौ नैन कहनक । रँहूँत पहिने एकठाँ रँमावीक दोवान एनोपेथीपवसँ ओकव रिँश्यास खतम भइ गेन



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

छने । उना हमव एकठी मजकियन दोस्तु ओकरे सोनाँ होमियोपेथीपव नमहव नेकचव दैत कहने छने जे एहि पेशीक पाँडवमे दर्राग कम पाग रैसी चनेत छेक ।

थाक२ उँठैत-उँठैत हमव घारक मादे जननिहावक संख्या किछु थाव रँठनेक । किछु गोठे घार देखाँरँ नैन कहनक । एहि काजमे हमवा सभसँ रैसी हिचकिचा - हठि होगत छन । मायकेँ जाहि समय सूचना भेटने, तखने हमव छोट भाय ककरोसँ मगड़ । क२ बहन छन । माय रैसी ध्यान नहि द२ सकन । कर्पूव था नावियवक तेन नगारँ नैन कहि जिम्बव भाय मगड़ । करैत छन, ओकरे जाय नगन । भाय थाँ गारिपव उँतवि नायन छन-साव, हठियाक सभ ह्शती घुसाड़ि देरँ !'

हमहँ तेजसँ ओकरे दोडनहँ । मानूम भेन थावि छाँटि-छाँटि करीरँ रीत भवि खेत ओ खपन खेतमे मिना नैने छनेक था थाँ नापियो मानय नैन तेयाव नहि । हम भायकेँ शाँत कयनहँ । रँहूत बाति धवि एहि तवहक कतेको समझा पव गप्प सप्प होगत बहनैक जाहिँ हमवासभकेँ निपठरँक अछि । माय हमवासँ शिकागत करैत बहन जे हम रँहूत नापवराह भ२ गेन छी ।

रिँछोनपव जाक२ हमवा ध्यानमे थायन जे दूपहवियासँ एखनधवि सभ चर्च घारसँ हठिक२ होगत बहनैक अछि था एकाएक हम एक तवहक थावामक अरुँभर कवय नगनहँ ।

हेव सोचय नगनहँ हम एहि कोठनीमे सभ कपड़ । उँतवि नग्न भ२ जाग, घारक सभठा चेन्ह मेठा जागक, अंग-प्ररंग निर्रिकाव था सुन्दर देखाय नागय । झुदा तुवस्त एहन हँरँ अरुँभर छनेक । थास्तु-थास्तु हम निल्लमे डुरैत गेनहँ । हमवा नागन जेना हम कगएक गोठाँसँ नड़ि-मगड़ि बहन छी । ठेहनपव ओहिठामसँ खून रैसी मात्रा मे निकनि बहन अछि ।

भोवमे घार हेव ओहिना छनेक । हम ठीक टँगसँ किछु तय नहि क२ पुरैत अनहँ जे पहिने गामक सभठा मगड़ ।सँ निपठि नी रा घारसँ । एहि अनिर्णयसँ उपेन्न थकनीक कावण हम रँहूत स्वस्तु भ२ केँ पडन छनहँ । माय ह्शुतिथाह डेग उँठोने हमवा नग थायन था घार ओहिना ताजा देखि तमसाय नागन । हम कहनिये-'गामक मगड़ ।...' राक्य पूवा हेरँसँ पहिने माय रँजर शुक क२ देनक 'रैवारैवी निपठि नेरँ ! तौँ पहिने घारक गनाज कवा थाँरह ।'

हम सपठि क२ अंगा उँठओनहँ था रिदा भ२ गेनहँ ।

भाग_रौ

मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृताम्

(संपूर्ण मैथिली नाटक) - (थागाँ)

नेथिका - रिता बानी

पात्र - परिचय

मंगतू

भिखावी रँचा 1

भिखावी रँचा 2

भिखावी रँचा 3

पुनिस

यात्री 1

यात्री 2

यात्री 3

छात्र 1

छात्र 2

छात्र 3

पत्रकाव हरक



पत्रकाव हरती

गणपत कक्षा

बाजू - गणपतक रैठा

गणपतक रैठा

गुंडा 1

गुंडा 2

गुंडा 3

हिजड़ 1 1

हिजड़ 1 2

किसुनदेर

बामखासरे

दर्शक 1

दर्शक 2

खादमी

तारै

मूनी - मंगतूक माय

पुबुष - मंगतूक पिता



भाग_रौ

(संपूर्ण मैथिली नाटक)

अंक_:_2

दृश्य_:_2

(मंगतूक स्थान - भोवक रेंना - मोठैव गाड़ ी स' एक गोष्ठ सैठ उतरैत अछि - गाड़ ीक
दबराजा होनरै, रैंद कबरौक, जेरै स' ठाका निकानरौक अछिनय.. ठाका निकानिक' ओ मंगतू
दिस-रैंद त अछि..)

आदमी : उठ, उठ, ए भांग.. भोव भ' गेलै ।

(मंगतू ओकवा दिस प्रज्ञाहन नजबि स' देखैत अछि । रोजैत किछ नष्ट अछि..)

आ नै - एकारन ठाका । बाथि नै ।

मंगतू : एकारन ठाका ? झूदा कियेक ?

आदमी : आंग हभव रौञ्जक रबथी अछि । त्रौहण अथरा दबिदनावायण भोजन करैरौक

हूसति अछि नष्ट तै, आंग पाँच लोक के दान क' देगत छियै ।



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृताम्

मंगतू : सारं, हमव एक गोठ रिनती खट्टि.. सारं, ई पाङ्ग खहाँ बाथि निय.. खा एकवा रँदना मे हमवा कौनो काज द' दिय.. पतियाँ सारं जी, हम काज क' सकै छी.. ई हमव हाथ देखियो.. गोव देखू.. (रिचित तबीका स' हाथ-गोव चनरैत खट्टि) सारं जी.. हमवा खङ्ग नवक स' निकानू सारं जी.. हमवा काज दिय.. कहलो.. पैघ-छोठ.. खहाँ के शिकायतक मोका नथि देरँ सारं जी । (ओकव पएव-पकडरौक खलिनय करैत खट्टि । खादमी घरँड क' पवाएत खट्टि । गाड ी मे रँसराक, सृष्ट कवरौक खलिनयक संग खौमाएन स्रव मे..)

खादमी : हूँ ! काज चाही । देह न दशा, झुर्गी प्यारे हँसा । नीक-नीक लोक के त' काज भेटै नथि छै.. सब ठाँ त' भती पव लोक नागन छै.. च्चारक समय मे ख'खरौव मे लोकवीक रित्रापन भवि.. तकवा रौद हम्म ! सबकावक खामदनिथ छै । ई रित्रापन स'.. डीडी, पे-ऑडिब.. एकवा देखियो.. काज क' नेरँ.. कौनो काज.. जहन कौनो काज कगए नेरँ त' माँग भीख ! एहो त' काजे छै खा रँड मेहनति खा हिम्मति रँना काज छै ।

(गाड ी चनेरौक खलिनय संगे मंच स' रौहव । रौहव जागत काने मंगतू पव नजवि..)

मंगतू : चनि गेनाह । सरं चनि जागत खट्टि । भीखक एक गोठ खँरनी, कपेया हेंकि क'.. रँस ! साधे बहि गेन जे किओ हमरो सहावा दितियेक - अपना पैव पव ठाँ हेंरा मे.. लोक खाओव पतियाँ किये नथि छथि जे हम ठाँ त' सकै छी.. निख-पढ़ि सकै छी.. ई देखू (हाथ स' जमीन पव किछ निखरौक प्रयास करैत खट्टि) .. खा.. खा.. ई किसुनदेर खा वामखामरे भाङ्ग त' कहत छथि जे हमव दिमागो रँड तेज खट्टि (कनेक झुकागत खट्टि ।) तै त' हूनकव रँडका सारं हमवा नग खएन छनाह.. रौप लो, की सृष्ट-रँड, की शान.. (मंगतू पव स' फेड खाँडँ)

(रँस रँक खारंभ)

(एक खधेड, रौरँदार रँना राजि.. नाम तारै.. मंच पव रँचैनी स' एम्हव-ओम्हव रँनि बहन छथि ।

वामखामरेक प्ररेशी)



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृताम्

बाम : साहेरें जी ?

तारें : (खनसोहात स्रब मे) yes ?

बाम : साहेरें जी किछ पिबीशानी मे बुंमा बहन छथि ।

तारें : परेमान नथिः होग त' की बाग मन्हाव गारी ? सभठा डाठा कनेकठ कएन छन । पता नथिः कोना हाड डिस्क सेहे उडि गेन ।

बाम : साहेरें जी, कम्पनेन नथिः निखाउन की ?

तारें : एंठी त' क' देनहूँ । मगब तकवा स' की ? गर्जनीयब त' कान्हि ए खाओत ।
खा मैठेब हबि हानति मे खागए देरौक अछि । तेँ त' नेठ रँगसन छी.. झुदा.. (माथ पकड़ि
नेगत अछि ।)

बाम : साहेरें जी.. छोठ झूह पेघ गप्प.. खनसोहात मन सेहो.. झुदा नीचाँ.. छे ने..
ओ नोथ.. मंगतू.. त' सकैय' ओ रँता दियए..

तारें : (एक नजबि ओकवा देखि ठठा क' पेठ पकड़ि क' ठठाएत अछि ।) ऊ नोथ
भिखमंगा, ऊ हमबा डाठा रँताओत ? रौ, तोहब दिमाग दूकसु त' छे ने ! जे डाठा कनेकठ
कब' मे हमबा एतेक समय नागन, एतेक - एतेक कितारिँ कंसले कब' पडन, ओ ओहि खनपठ,
नोथ, भिखमंगा..

बाम : साहेरें जी, कम्पूठेब त' अहाँ के अहिना.. गर्जनीयब कान्हि ए खाओत । काज
कवरौक अछि ए अहाँ के । खाब कोनो उपाय त' अछि नथिः ! त' एक रँब ठबाग कवरौ मे हजे
की ! हमबा ओना रिश्वरस अछि जे ओ अहाँक अरँस रँता देत ।

तारें : कोन खाधाब पब तो कहि बहन छे एना ?



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृतम्

वाम : ओ पठ' जाने छै । हमही आ किस्वनदेर मिनिक' ओकवा खडव ज्ञान करैनिथे ।
ओकव नगन आ मेहनति.. आओ ओ खखरौबक नाम स' न'क' अंतिम पन्ना आ संपादकीय धरि पढ़ि
जागत अछि । सबकिछ सिनेठ' पव निखन नागन जकाँ मोन बहैत छै ओकवा । तेँ हम.. रौकी त'
खहाँक गछा. ।

(ह्लेशैरैक समाप्त । प्रकाशि मंगतू पव ।)

मंगतू : वामखासरे कहना सञ्जु तारै साहेरँ आएन डनाह ! (हंसैत) रौब रौ रौप ! की
गुमान मे हूनन डनाह । हमवा न'ग ठाठ हेरौक रिरशिता, मूह पव रँहूत किछ जनरौक दर्प, जेना
दुनियाक संपूर्ण ज्ञानक गठरी हुनके नग हूअ, हमवा नेन हुनक आँखि मे नहवागत घिबनाक समंदरि,
संगही एकठाँ उपकावक भार सेहो, जे देख - हमही छी, जे एँनौं तोवा नग.. ने रिनगया के,
हो जी, एँनौं त' कोनो हमवा नेन.. एँनौं खहाँ खपना नेन.. एँनौं, पूछनौं, हमवा मोन छन,
रँतेनौं, खहाँ निखनौं, डुपेनौं, आ रिसवि गेनौं । एकठाँ धगुरादो धरि नथि । वामखासरे भाग नेख
देखाओन.. मूदा पढ़ि नथि सकनहूँ - अंग्रेजी सञ्जा । हमव ज्ञानक उपयोग कोना भेने.. ओ हमरे
नथि पता.. गएह त' अछि हमव तकदीव.. (रिचित्र हँसी हँसैत अछि.. पत्रकाव-हरक-हरतीक
प्रवेश । ओकवा हँसैत देखि थम्हि जागत छथि ।)

हरती : मंगतू ? (मंगतूक हँसी थम्हि जागत अछि ।) की भेनो ? रँडु हँसि बहन
छे ।

मंगतू : (कनेक सफ़चागत) जी.. ओ किछ नथि.. रँस.. तारै साहेरँ रँना रौत..

हरक : (कम्फ़ सुब मे) सुनन जे ओ तोवा नग आएन डनाह आ तोँ एकदम
ठैपरेकार्डिब जकाँ चानू भ' गेन छने ?

मंगतू : (ओकव कम्फ़पन के नम्फ़ित नथि करैत खपनही शराह मे) त' की
कवितियेक ! एतेक रँडका साहेरँ ! एतेक पिरीसान.. चाँसे रूँमन जाओ जे हमवा पता छन । -



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृतम्

जे किछ पता छन, से सब रँता देनियग.. देखनियग हम नेथ.. झदा थंथेजी.. सारँ, थहाँ हमबा थंथेजी पठरँ सिखा देरँ ?

हरती : (मोन पारैत) हे स्रव, हम सब एकबा पब सृष्टावी केने छनहँ ने ?

हरक : थरे, डू त' पवान कथा भ' गेने । रंडवहन एंड पारवहन प्राजेवठ ।

हरती : एकबा किछ नाभ करेनछ की नथि ?

हरक : माने ? (ऑफिस दिस रँढेत थि ।)

हरती : (थनुसवण करैत) माने ई, जे ओहि समय गप्प भेन छन जे पेमेठ भेनाक रौद थहाँ ओकबा किछ देरँ.. जसुठ हँव ए नागस जेमचव.. झदा, थहाँ त' हमरो किछ नथि रँताउन ।

हरक : थँहू त' ! ओ की केनकई जे ओकबा पेमेठ कवियई ?

हरती : रएह त' धूी छन । नथि रँतेतियेक त' थहाँ काज क' सकै छनहँ ? नथि न ! थारँ किछ ओहि गवीरँ के.. (दू ऑफिसक गेठ धवि पँचगत छथि । वामथामरे थि किस्नदेर दूक गप्प सुने छथि ।) काज निकनि गेन त' रँस, झह हेलि नेनछँ !

हरक : जमाने एएह छै डारिग । देखनहँ मि. तारँ के.. सभठा काज कवरौ नेनछि झदा नामोक फेडिठ नथि..

हरती : थँहू सएह रँन' चाँ छी त' रँनू.. झदा हमब मानधन हमबा दिय' ! हम ओही मे स' ओकबा..

वाम : नमस्काव सारँ ।

हरक : नमस्काव नमस्काव ।



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृताम्

किसुन: कौनो गंतीव गप्प सब ?

हरक: उंछं, किच्छु नरिं ।

हरती : किछु कियेक नरिं ? खरे, हम दनुं ओहि मंगतू पव काज करै छनहूँ । तहन
ङा गप्प भेन छन जे पाग भेठना पव हम किछु ओकरो देरै । झदा.. ङा त' हमरो पाग योथि
गेरैन्हि..

हरक : (जेना भेद खुनि गेन ह्खए) ओके रौरा ओके । खरक पाग खरक के द'
देरै । ओकरो द' देरै.. खर त' खुश ? (हमह्सागत) सभके सभ किछु कहर जकवी छै की ?
(रौजेत भीतव चनि जागत छथि । हरती पहिने जागत छथि । पाछा स' हरक खपन तर्जनी माथ
पव न' जाक घुमरैत छथि -- माने हरती कनेक फेक छथि ।)

वाम : देखन भगया ङा रँडका-रँडका नोकक खेन ! पत्रकाव छथि ङा सभ । जनताक
पैरोकाव । जनताक बडुक । बडुक खुदे भडुक.. हाँक' नैन कछ त' एकदम सूकजे पव, देर'
रैव मे पद-पद पाद' नगताह ! हजारो ठाका मिंठने हेते मंगतुखाक नाम पव । खा ओकरे किछु
देरौक नाम पव ...

किसुन : सठक सीताराम ! सभ एक्क खबियाक भठि रो भाग !

वाम : उं तारै साहेरै ! ओकरे मदति स' ओ लेख निखनहि । छपरौ केरै । खर
हमवा त' ख्रोजी, हंगरेजी खरै नरिं छथि । हम पूछ' गेनिये जे साहेरै, खङा मे मंगतूक
कौनो जिकिब-उकिब.. !

किसुन : की रौजनहि ?

वाम : खरे, ओ तेहेन न खरिं गुरेवनहि जे एह -'ङा लेख हे वामखासरे, गन्ठवरू
नही कि सरका नाम देते बहे । ' हम त' तगयो ठीठ रँनन रँजनहूँ जे साहेरै, ओकव कौनो भना
भ' जयतिरिहि । भिखमगाक जिनगी स' ओकवा छठकावा भेठि जगतियेक । ओ हेव खरिं



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृताम्

तरेवनहि । हम हेलरो खेखव जकाँ राजनियेक जे ठीक छै, नाम नथि देनिये त' किछ दामे द'
दियहु । नगते ओकरो जे हँ, आगु खपना दिमागक कमागु भेटैतए.. सभ साव चोव अछि- हु
तारै, गु डोँड t.. काम बहना पव रौरू-भैया आ निकनि गेना पव दू-दू नात ।

(पाशुर् स' सोगरैना धुन । प्रकाशि मंगतू पव । ओ चिकरैत अछि)

मंगतू : किओ हमवा अगु नवक स' निकानि क' न जाहु । रौ तकदीबक नाति, कत'
हुँह मवा बहन छै । देह नथि त' तोहें नीक जकाँ बहिहें हमवा नग । कोनो नीक, पागुरैना घब
मे देते । माय-रौप नग । हुँदा, जहन खपने माय-रौप खपन नथि भेल तहन..

(सोगरैना धुन उँसेर धुन मे रँदनि जागत अछि । मंगतूक चेहवा हेलु आउठ होगत अछि ।
एक कांपनिक लोकक आभास देगत नान-नावंगी-पीयब रोशनी पसवगत अछि आ ओहि प्रकाशि
मे देखाग पड़ैत अछि - एक गोठ म्त्री, जकवा कोवा मे एकठा नरजात अछि । अगु
म्त्रीगण नाचि-गारि बहन छथि !)

कपेया मागे ननदी नान के रँधागु

एके कपेया मोवा ससुब के कमागु

अठनी ने नो ननदी नान के रँधागु

एके अठनी मोवा पिया के कमागु

ओ ना मेँ दूँ ननदी नान के रँधागु

एक म्त्री : देखु भोजी । चान जगसन रँठा देनहि अछि हमव भैया अहाँ के । आरँ रँगव
छुतिसु भवक उँडकस के नथि मानरँ ।

(सभ हँसत छथि । म्त्री नजागत अछि । पकषक प्रवेश । हँसत-नचैत म्त्रीगण रिदा भ' जागत
छथि ।)



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृतम्

प्रकष : बाधा, की नाम बाखरँ एकव ?

स्त्री : (नजागत) जे खहाँ कही ।

प्रकष : हमव मानी त' एकव नाम बाखरँ चिबजरी । खूरँ पढाएँ, निखाएँ, कनकठव
रँनाएँ ।

स्त्री : हमवा मानी त' ओकवा पव अपन मज्जी नधिं थोपी । अपना मज्जी स' ओ जे
रँनय, डाकठव कनकठव, एकठव..

प्रकष : अछा भङ्ग, हम त' ह्फमक ग्नाम छी । ह्फमक रँगम जे ह्फम देतीह,
ह्फमक ग्नाम रँजा खानत (कोर्निशि करैत अछि । स्त्री हंसैत अछि । प्रकष छेड़-त अछि) गीत मे
कहनिथे - पिया के कमाङ्ग नधिं देरँ ननदि के, हमव रँहीन के । ओ जरीरित नधिं छोटती अहाँ
के ! तहन ? तहन हमव की ह्गत (खाराज रोमाठिक होगत अछि । स्त्रीक हंसी । अंधकाव-
प्रकाशि मंगतू पव ।)

मंगतू : एहेन माय-रँप हमव कवम मे कत' ? समाजक सामना कवरँक हिम्मत नधिं
भेले । अङ्ग समाज मे श्राप भोग' नेन छोट्टि देलेहि । सोचन, जे अपने स' अपन तकदीबक
कितारँ निखरँ, ऋदा ङु रँकष्टा ग्नी हमरे जिन्दगी के रँकष्टा क' गेन.. नोथ, नून-नागड. रँनन ङ
जिनगी । मोगत की एकवा स' अंधनाह हेते ? .. ऋदा मोगतो त' नधिं अरँतेत अछि । नधिं
घबक आसवा, नधिं समाजक, नधिं नोकक । कथी नेन जरीरँ, ककवा नेन जरीरँ, ङ जरीरँक कोनो
अर्थ ?

(मंगतू लोकामी पावि कान' नागैत अछि । वामखासरे आ कियुनदेर ओकवा नग अरँतेत छथि ।)

वाम : अपन ङ अँफिसे मे त' कतेक रिकनाग नोक काज करै छथि, भोगकव

साहेरँ, नीना मेडम, सिन्हा जी.. ऋदा .. एक दिस एहेन माय-रँप आ दोसव दिस ङ समाज.. सलक



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृतम्

झाँठन मे खाँग्व कव' रँना । रौ, तोवा कौन मतनरँ छौ किओ किछु कवए । ककरो टैन स' जीरँ
नधिं देतेँ ई समाज..

(वामखासरे आ किसुनदेर मंगतू के धैवज रँधरँत छथि । पान्दरँ स' करिता)

'जिनगी जूँखा अछि

सष्टा अछि, रँजाव अछि

ताशि अछि, पत्ता अछि

रोशनीक रँद्धि

चोन्हियाएन नोक

भाँड अछि, एकान्त अछि

भोवक तावा रिशान्त अछि

तावा छूँठए नधिं

खास छूँठए नधिं

(फेड खाँडँ)

(अगिना अँकमे जावी)

मैथिली के न क किछु अस्वरिधाजनक प्रश्न...स्वशान्त ना



कखनो क सोटेँत छी जे मैथिली भाषा ओव मिथिनाँचनक रिकाम ओहि रूप मे कि एक नहि भ सकने जेना दोसब प्रान्त आ खान भाषा सरँ तबक्की क गेले । एखुनका पविदृष्ट खगव देखी त रूमागत खडि जे मैथिली साहित्य के रिकाम आ एतुक्का रिकाम के न क चिंता सिर्फ किछु झुंठी भवि लोक के दिमागी कसबत ड़ेक-खाम मैथिल के एहि स कोनो सरोकाव नहि । हानत त ई खडि जे मैथिल लोकनिके धियापुता दबभंगो मधुरनी मे मैथिली नहि ,हिंदी मे रौत करैत छथि । एकब की कावण ड़ेक आ एना कि एक भेलेक ।

खगव एकब तह मे जाँत त एहि भाषाके संग सरँस पैघ खन्याय ई भेलेक जे एकबा किछु खाम गनाका के मैथिली रनयराँ के आ किछु खाम लोकक भाषा रनयराँके प्रयास कयन गेलेक । मैथिली के दबभंगा मधुरनी आ खामक ओतुक्का त्रौक्षण के भाषा रनाक बाधि देन गेलेक । मधेपुवा-पूर्षिया के रौत त दूब दबभंगो मधुरनी के रिशान जनसङ्घदाय ओ भाषा नहि रँजेत खडि जे कितारी मैथिली के रूप मे दर्ज ड़ेक । ओना ई रौत दोसरो भाषा के संगे सल ड़ेक नेकिन कमसं कम ओतय ओहि भाषा के स्थानीय रूप के हिकावत या हेय दृष्टि सं नहि देखन जाँत ड़ेक । मैथिली मे एहि तबहक कोनो प्रयोग के रँजित कय देन गेलेक । मिथिना के खेतिहव,मजूब, झुसनमान आ निम्नरञ्ज ओहि भाषा मे तस्वीर कहियो नहि देखि सकन । जखन मिथिना राज्य के मार्ग उठन त हमसरँ झुंगेव तक के खपना मे गनि नेत छी, नेकिन जखन भाषा के रौत हेतेक त ओ सिर्फ मधुरनी के पंचकोसी या मधुरनी मंमावपुव तक सिमठि कय बहि जाँत छ ।

हमबा याद खडि जे कोना सहवसा या पूर्षिया के लोकके भाषा के मधुरनी के गनाका मे एकठाँ खनग दृष्टि स देखन जाँत ड़ेक । गनाकाङ्ग भिल्लता कोनो भाषा मे स्रुभारिक ड़ेक नेकिन यदि ओ खँकावरोध सं ग्रस्त भ जाँत त ओहि भाषा के भगराने मानिक । हनस्रुवरूप जखन भाषाङ्ग आधाव पव राज्यके मार्ग उठनेक त मिथिनाँचनक रिवाँठ जनसङ्घदाय ओहि स खपना के नहि जोड़ाँ सकन आ ओ खान्दानन नाख संभारना के रौरजूद नहि उठि सकन । बहन सहन कसबि राज्यसबकाव क मैथिली रिरौधी बरैया पूवा कय देनक । मैथिली के रीपीएससी स हठाँ देन गेलेक, आ मैथिली खकादमी के निर्जीरथाय कय देन गेलेक । नेकिन एहि के नेन सत्ता के दोष



कियेक देरौ, जखन जनता के दिस सं कोनो श्रम प्रतिरोध नहि छुनैक त सत्ता त
थपन खेन कवरौ कबत ।

उना त ई कहिनाई फ़नासिरँ नहि जे मैथिली मे खाम जनता के नैन या प्रगतिशील
चेतना के स्रव नहि फ़खरित भेनैक नैकिन ओ ओहि तबीका सं र्यापक नहि भ सकनै
जेना खान भाषा मे भेनैक । मैथिली के बचना मे ओ फ़खाधावा नहि भ सकनै ।
दोसबरौत ई जे कहियो मिथिना मे कोनो समाजसुधार के खांदोनन नहि भेनैक
जेना रँगान रा महाबाष्ट्र मे देखन गेलैक । तखन ई कोना भ सकैछ जे सिर्फ
भाषा के त रिकाम भय जाय नैकिन समाज के दोसब क्षेत्र मे ओहिना जडऱा
पसबन बहैक । मिथिना के गतिहास के देखियोक त एतय येह भेनैक । दोसब
रौत ई जे मिथिना या मैथिली के नैन जे संस्था सरँ रँनन ओकब कामकाज के समीक्षा
सेहो पबय खारथक । मैथिली के रिकाम के नैन दर्जनो संस्था रँनन जाहि मे चेतना
समिति के नाम खग्रगण्य छि । नैकिन ओ चेतना समिति की कय बहन छि खा
जनता सं कतेक जडऱा छि एकब रिशद रिरेचना ह्थक चाही । सानाना जनसा खा
सेमिनाव के खनारा एकब मैथिली भाषा के नैन की योगदान छैक तकब रिशद
समीक्षा ह्थके चाही । मैथिली के रँजनिहाव भावते मे नहि नेपानो मे छि, नैकिन
दूनू दिसके भाषाभाषी के जोडऱा के कोनो ठोस उपाय एखन तक दृष्टिगोचर
नहि ।

एखन जहिया सं मैथिली के संरिधान मे मान्यता भेनैक छि तहिया सं साहित्य
खकादमी के किछ रँसी गतिरिधि देखय मे खरि बहन छि । नैकिन मैथिली के
जखन तक खाम जनता खा ओकब सरोकार सं नहि जोडऱा जायत एकब खान्दान धाव
नहि पकडऱा सकैत छि । एकब सरँस पैघ जिम्झरारी ओहि बुझिजरी नोकनि पब
छि जे मैथिली के प्ररोधा कहरौ छि । हुनका सं ई उम्मीद त जकब कयन जा
सकैछ जे ओ एकब ठोस, सरँग्राही खा समीचीन समाधान सामने नारँथु खा ओहि पब समग्र
कपे चर्चा हो ।

कथा-



था ओ माबनि गेनि !

- रूषेरी चन्द्र नान

तखनेसँ खदकैत भातक माड सुखा गेलैक था भात जडय नगलैक । ओकव तीब्र गन्ध जखन चाकलव पसवि गेलैक तँ हुनियाक तन्द्रा ठूँलैक । ओ पित्त चून्हिमे पानि मोकि देनकि - 'दूर्बहः ! थारँ खएरै के कवतैक ? ! . गहो भात त ह्नेकएरै कवतैक ङ' हुनिया मोनेमन पठपठाएन बहय । ठीके, थारँ किछ ओकवा कोनो थाएन जएतैक ? थारँ तँ एकहिठा रात होएतैक - सभक चनि गेनाक राँद ओ मोनसँ कानति था ताधवि कानति जाधवि लोबक राँसनसँ खन्तिम ठोप नहि ठघवि जएतैक ।

ओकव गड तखनेसँ भारी छैक । थारँसँ बहि बहि कः ठघरैत लोबकेँ ओ कहना बुकरैति थारँ बहनि थछि । कानह उँचकाकए साड सँ गानपव समरैत लोबकेँ पोछैति हुनिया दोकानमे रैसनि सिपाहीसभकेँ थपनाकेँ भानसमे तन्नीन देखएरौक प्रयत्नमे नागनि थछि । झुदा थारँ ओकवामे थाओव समर्थय नहि बहि गेन छैक । थपन लोकामीकेँ लोकरँ झुशकिन भेन जागत छैक । कखनो ठोह पड । जएतैक । एम्हव गसभ मसूतसँ पिथयमे नागन छैक । . त्रुवस्त शीयदे जाएत । सभ दिन जकाँ बहि बहि कए हुनियासँ ठिठोनियो करैत छैक । हुनिया दाँत निकानि हँसक थभिनय करैति थपनाकेँ धूँसँ पिडित देखरँक प्रयत्न कए बहनि थछि जे कहना झँहमोसिसभ रूँमेक नहि ।

ओ राँवी जाएक रहन्ने उँठि जागत थछि था रीछे राँवीमे रैसि कए सिसकि सिसकि कए कनेक कान कानि नैति थछि । समयक मावि ओकवा सभ किछ सिथा देने छैक । ओ जनेत थछि जे केओ था थामकय ओकरे दोकानमे रैसकय पिथयरँनासभ यदि ओकवा कनेति देखि नेतैक तँ ओकरोपव शंका कवए नगतेक था नहि जानि ओकवा कोन निखनाहा भोगय पडतैक । . ओ ह्नेव थपनाकेँ संयत करैति थछि था कनपव थारँ ह्नेकड कए हाथ झँह धोए थपन पीठ ी पकडि नैति थछि जेना किछ भेने ने होगक था थारँजुक घठनासँ ओकवा कोनो मतनरै ने होगक । ओ थपनाकेँ ने हर्ष ने रिषमादक सजीर थभिनय दिस नगा दैति थछि । एतेक दिनक थभिनय जे से .



कहना काज चनेत अनेक अदा आजूक अतिनयपव ओकव जीरन/मवण निर्भव करैत छैक । ओना मृत्युसँ ओकवा ततेक डव नहि छैक, अदा यातना आ अ्रुवतायादेँ जे ओ सुनेति आनि अछि तकव पीड एक कनपनासँ ओ हनान होगत छुागव जकाँ सिंहवि जागत अछि । एखन आओव किछ नहि अतिनयेठौ ओकवा एहि त्रासदीसँ रँचा सकैत छैक । तेँ ओकवा अपन भारनाकेँ कहना मसोडय पडतेक । ओ अपन छातीकेँ हुनाकय एकरैव नाम सँ लेति अछि आ दोकानमे पेसि जागति अछि ।

‘ की भेनौअ हुनिया ? . आँखि नानतेस छोक ? ’ – हरनदाव भूनोठन ठाँवव म्मेत पडनकेक ।

‘ किछो नहि ! ’ – ओ हडरँडा जागति अछि – ‘धुआँ आ पिआँज हवान कएने अछि । . तेहन जवना काठी किना गेन जे . । ’ ओ आगाँ म्हाङा देरँक कोशिनि कएनकि ।

‘ हमवा तँ नागन मोन तोन खारँ छोक ! . जे होडक, अदा एखन गान रँडु नीमन नगेत छोक । . आ आँखि ! . एकदम नानतेस, बसाएन . दाक पिखन जकाँ ! ! ’ – हरनदाव जेना दागि देने होगक ।

हुनियक अँडीसँ कनपणीधवि जेना मनमना गेन होगक । मोन भेनेक जे चूडकी पकडि कए दू थापव जमा दैकि अदा ओ संयत बहनि, आ म्थिवसँ राजनि – ‘अहाँकेँ तँ सदिखन . . ! ’

हरनदाव भूनोठनक मोन खुशीसँ नहवाए गेनेक । गानपव अस्की पसवि गेनेक । काँस्टेरेन रँनवाम सहनी हरनदावकेँ प्रात्साहित करैत कहनकेक – ‘ठीके तँ कहति अछि साहेरँ, सदिखन कोनो एना कएनकेअ ! . ठाँगपव ने कवक चाही । ’

पिअ हुनियक देह जडि गेनेक । नगनेक जेना केओ गवमाएनमे खोनन पानि टा डि देने होगक । . अदा ओ कवओ की ? एखन तँ सहहि पडतेक । आङा वातिमे कोनो राँठ निकनतेक की ? कोनो ने कोनो उपाय तँ कवही पडतेक । राँचरँ तँ गज्जतसँ, नहि तँ मवरँ नीक । ओ म्थिवसँ जरारँ देनकेक – ‘दुर्व, आँ जन्दी ! . अँहो नग दुआँगअ ? तीमन नीमन अछि कि ने ? ’

रँनवामकेँ जेना मोका भेँटि गेनेक, हँसत कहनकेक – ‘ अँह, तीमन रँडु नीमन छैक । जेहन हुनिया तेहन तीमन ! हमअँसभ आदमी चिन्हिकए अरैत छी ने ? तोबहि जकाँ तीमनो तेज छोक । ’



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृतम्

‘ रेशी मिबचाग पडि गेलैक की ? ’ - ओ सविचारक प्रयत्न कएनकि । तेयो ओकब भौह खनजानमे सिह्रुडि ये गेलैक । ओकबा नगलैक, पुनिसरौसभ कहुँ घुमाकए तँ रात नहि करैख ?

‘ नग, ठीक छैक । तीमन कनी तेजे नीक । ’ - रैनवाम सहनी दाँत निपोडत कहनकैक ।

झदा हुनिया किछ नहि राजनि । ओ कनेक ससवि कए दूब मोचियापब रैसि बहनि । पुनिसरौसभ रँडी कानधरि खागत बहनैक । हाँ हाँ ही ही करैत बहनैक । रीच रीचमे कनथिया कए तकितो बहनैक । ओकबसभक गप्प ओ खाग रूमि नहि सकलैक । बहि बहि कए मन ब्याहन भ’ जागक । रैचैनी कठने ले कठगक । मोन होगक खँवा जाए खा खूरँ जोडसँ कानए । ओ मनेमन गौसार्गकैँ गुहावनकि - ‘ हे भगरान ! . केहन रिपति ! ! . पुनिसरौसभ जएरौ नहि करैत खिछि ! ’

सुथिति खरँ ओकब समुहावमे नहि छैक । . कतहूँ रेशी भ’ क’ ले खसि पडए । यदि एना भ’ गेलैक तँ सभ भेद खूजि जएतैक । नहि जानि कौन कौन यातना भोगए पडतैक । ओ जोडसँ दम थिचनकि खा खपनाकैँ संयमित कबक प्रयत्न कएनकि । . पुनिसरौसभ रैसने बहनैक । कने कने कानपब दाक मँ गलैक खा पिरैत जागक । कनथिया कए ताकक फेम जाबीये बहक । . हुनियारैँ शंका होमए नगलैक । ओ सोचए नागनि - ‘ एतेक दाक तँ ई हरनदाब कहियो नहि पिरैत छन । एकवासभकैँ शंका तँ नहि भ’ गेल छैक ? ’ . हुनियारैँ भेलैक जेना हाथ पैब हुनि गेल होगक । झदा, करो की ? दोसब कौनो उपायो तँ नहि छैक । भागत तँ मावनि जागत । होगत होगत कहुँ खहिना पकडि कए न’ गेलैक तँ दूब यातनामे पडि जागत । नहि जानि की की भोगए पडतैक ? . हुनिया खाँचवसँ खपन गान पौछैति खिछि । ओकबा खाशिक किवण देखागत छैक । ओकबा नगैत छैक एकवासभकैँ किछ मानूम नहि छैक । मानूम बहितैक तँ कखन ले पकडि कए न’ गेल बहितैक । . ओ फेब सुथिब भ’ जागत खिछि । कनेक खाओब देखति । खा हुनिया गुँघाएक खिन्नय कबए नगैत खिछि ।

‘ हुनिया सरैरे गुँघाए नगलै ? ’ - हरनदाब ठेकि दैत छैक ।

‘ खरँ खरैब नग भेलैक ? ’ - हुनिया दूनु हाथ माथक उपब न’ जागत देह हाथ मावक खिन्नय करैति कहति खिछि । . पुनिसरौसभ उठि जागत छैक । ओकबा नगैत छैक ठीके एकवासभकैँ किछ मानूम नहि छैक । कौनो शंका नहि छैक ।



रूमागत छैक जेना हेवागत दम किछ पनठनेकखं ! ओ ठाठ भ' जागत खंछि ।
मनेमन हिसारि जेओए नगेति खंछि ।

‘ कतेक भेनोक ? ’- हरनदाव भूरोठन प्छैत छैक ।

‘ तीन सय रारिन । ’ - हुनिया सयत होगत कहति खंछि । हरनदाव पनसहिया
दैत छैक आ हुनियामँ फिर्ता नए आगाँ रँटि जागत खंछि । पाछाँ पाछाँ दोसब
पुनिसरामभ सेहो रँटि जागत छैक । हुनिया दोकानक केरौडसभ रँद करैति
खंछि । केरौड रँद होगते नगेत छैक जेना ओ पताकए खसि पड़ति । ओ रँसि
जागत खंछि । आँखिसँ दहोरहो नोब ठँघबए नगेत छैक । ओ कोशिषि करैति
खंछि जे कोनो आराज नहि निकनेक । कनेको आराज ओकवा रँडका संकठमे ठकेन
देतेक । ओ दूनु पएब पसारिकए ठाँठमे खंझाँठि कए कानए नगेत खंछि । पूवा
खुनिकए सखिब भ' गेन पसबन आँखिसँ नोबक दू धाव ओकव गानपब ठँघरैत ठँप ठँप
खसए नगेत छैक ।

ओ सोचए नगेति खंछि, ओकवापब ठाँके रँज्रपात भेन छैक झदा ओहि रँज्रपातक
कावण के ? ओ सुर्यं खंखरा केओ आओव ? ओ ककवानेन कनेत खंछि ?
ओकवानेन खंखरा सुर्यं खपनानेन ? ओकवा नगेत छैक जेना आ कोनो तेज
रँहारक नदीक मोगनमे हँसि गेनि होए आ पतागत पतागत ओ मोनिमे आरँ समा
जाएति । ओतए ओकवा रँचारँरँना आ ओहिसँ उँराँवएरँना केओ नहि छैक । शायद
आरँ भगरानो नहि ! प्रकृतिक नियममे ओ ओनवाए गेनि खंछि । ओ खतीतमे
ठेना जागति खंछि । शायद ओकवानेन कान पाछाँ घसकि गेन छैक, रँतमानसँ
खतीतमे ! हुनियोक खतीतक सम्पूर्ण पबतसभ एक एक क' खुजए नगेत छैक
! !

पूरुषे आ ओकवि समरँन्ध नेनपनेसँ छैक । पूरुषे नङ्ठे डड ाडोबि पहिबने
ओकवासंगे गौनी गौनी खेनेक । देहपब किछ नहि, डड ाडोबिमे मनहाक
जानक घँघक, रँनेनक दाँत आ ननका मुँगा । हुनियोक देहपब कथु खोडे बँहक



। रस, ठेहनसँ उपव जाँघतक ओकवि मायक फुँठनाहा साड ीक ठूँकड । बहेत छलैक । डाँडसँ उपव पूवा खानीये । हँ, गर्दनमे खरससे कबजन्नीक ननकामाना नठकैत बहेत छलैक । जखन ओ गौनी फेकैति छनि घुचामी तँ माना नूनि कए पाछाँ नठकि जागत छलैक । घुचामी गौनी पिनतहि यदि पूर्णे हारेत बहेत छन तँ खौन्मारैए नगैत छलैक - 'हुनिया, माना पाछाँ चनि गेलोक ! . छाती उदास भ' गेलोक ? ' ओहो थोड़े छोड़त छलैकि - ' आ तौ जखन फेकैत छौँ तखन जे तोहब डाँड । नूनैत छोक, ठुँसा रैझक झँह जकाँ, ठप ठप ! '. तकबरौद दूनूमे मगड । भ' जागक आ खेन भँड । जागक । दूनू खपन गौनी समेटैत कनेत रिदा भ' जाय ।

हुनिया आ पूर्णेक घनिष्ठता रँढा ते गेलैक । लिनसबसँ साँमधवि दूनू संगहि बहए । मगड । होगक झदा कहियो पूर्णे गशाबासँ हँसाहँसाकए मना लैक तँ कहियो ञ खपने झँह हुनाकए प्रवनी पोखबिक तीडपबक पीपवतव रैसि जाय । पूर्णेकेँ खारहि पडैक । पूर्णे महीष चवारैए नागन तँ ओ रँकवी । संगक फ्रम कहियो नहि छुठलैक ।

पूर्णे सकून जाए नागन तँ कने ओकवा रूमाएन बहैक । ओ खपन राँडकेँ कए दिन कहनकैक जे ओहो सकून जाएति झदा कोनो स्नरौङ नहि भेलैक । . राँप भवि दिन दारुमे मसूत बहैक । लोक कहैक चौधवी थाक दारुमे रँरिदि भ' गेन । ओकव राँप दादाक दवरँजजापव चवि चविठा महीष बहेत छलैक । कहाँदोन, कारीसभ पहाडसँ मधेशमे गाय चवारैए थाएन बहैक आ एतहि रैसि गेलैक । एकव राँप कारीसभक संग मगवसभक दारु पिखए नागन । खपनो पिखए आ कारीसभकेँ पिखएरौ कवए । रस, रँरिदी शुक भ' गेलैक । कर्जा रँठलैक आ खेत रिंकाए नगलैक । धूर्त कारीसभ खेत किनएनेन रिंकाए जकाँ कान खपने बहेत छलैक । . धीरे धीरे सभ किछ रिंकागत चनि गेलैक । कारीसभ धनीक भ' गेन आ चौधवी थाक हवरौह । खारँ ओकरेसभमे हवरौही करैत खडि ।

हुनियारैकेँ पूवा याद छैक । ओ तखन दोसव जूँजि निकानने बहए । मायकेँ कहने बहैक जे ओ खारँ घास काँठति । मानजानक देखभान कवत । माय रँडु खूँ भेन बहैकि । राँडकेँ कहने बहैक जे रँैठी खारँ नमहव भ' गेनि खडि आ घबक रिंकाव कवए नागनि खडि । जखन पूर्णेक सकून जाएक समय होगक हुनिया सभ दिन छिष्टी न' कए निकनि जाय । रँतिखागत जाए आ रँैवियामे संगहि घुवए । सकूनक गप्प सप्प ओकवा नीक नगैक । पूर्णे सभ खेसवा स्नरँक । ओकवा नगैक, कहना ओहो सकूनमे पढँति । ओ मायसँ कए रँैव कहने बहैक जे सकूनमे कहना नाम निखा



दौक । ओ घासो कार्ठि कए सभ दिन खनरै कवति । झुदा माय नहि माननकैक ।
कहाँदोन रैठी पठि कए कवतेकि की ? खन्तमे ओ थाकिहेबि गेनि । खाग्न ओ
पठनि बहति तँ की एना होगतेक ? ओ हफकए नागनि । नगनैक जेना करेज
उनठि जएतेक ।

पूरुँसँ हुनियाक संगत छुठनैक नहि । धवमपुवसँ जखन ओकवा माँगए खएनैक तँ
हुनियाक रिखाहक चर्च रँठनैक । ओ पूरुँसँ सनाह कएने बहए । पूरुँसँ कहनैक जे
ओ झुजि खभियानमे नागन खडि । समय खनुकून होगते ओकवा न' क' जएतेक
खा धूमधामसँ रिखाह कवतेक । ओ डठनि बहए । पूरुँसँ सब हुनियानेन गौसाङ्गक
खादेशे जकाँ होगक । ओकवा रँडु नीक नगैक । जाहि अधिकारसँ पूरुँसँ हुनियारुँ
निर्देशित करैक तकव गर्मा ओकवा गनुदा दैक । ओ डठनि बहनि । मायकेँ साह
साह कहि देनकैक । पहिने तँ माय रूमओनकैक जे ओ मगव खडि खा हुनिया
थाक । कहियो मेन नहि हएतेक । मागनजन ओकवासभकेँ राँडि देतेक से
खनगे । झुदा हुनिया पूरुँसँ राँतपव खडनि बहनि । एक दिन ओकवा राँड रँडु
पीठनकैक । जखन पूरुँसँ मानूम भेनैक तँ ओ तमतमा गेन बहए खा राँडकेँ मावए
जागत बहए । हुनिया कहना कानिखिचि कए मनओने बहैक । तखन तय भेनैक
जे ओ घबसँ भागति । ठनकेमे चायक दोकान खोनिकए रैसति झुदा एकदम
गुपचुप, जाधबि समय खनुकून नहि भ' जएतेक । ओकवा नगनैक जे ओ तहिया
गन्ती कएने बहए । मावि खागयो कए घरेमे बहति तँ एना नहि होगतेक । ओ
होब हफकए नगैति खडि ।

कहाँदोन पूरुँसँ जनहामे नागन बहए । महीना दू महीनापव ओकवा नग खरैक ।
मौका भेठैक तँ दू राँत रँतिखागक । हुनिया कए रँव कहिकि जे ओ कोन चीजमे
नागि गेन खडि ? एहिसँ की हएतेक ? शुक शुकमे तँ पूरुँसँ रँडु जोशिये बहए
झुदा राँदमे ओकरो नागि गेन बहैक जे एहिसँ झुजि नहि भेठैतेक । झुजिक नेन
समाजेमे नडए पडतेक । नोककेँ सम्भारँए पडतेक । समय तँ जकव नगतेक
झुदा एक्केठा यएह उपाय डैक । मावकारुँसँ किछु हएतेक नहि । हुनिया कए रँव
कहनकैक जे ओ घरेमे घुबि जाएति । खारँ एतए ओकवा बहन नहि जागत डैक ।
झुदा, पूरुँसँ कहिकि जे जनदीये ओहो निकनत खा ओकवा न' कए कतहू चनि जाएत ।
ओ ओहो कहिकि जे ओ ओ हँसि गेन खडि । सोमेन निकननाग सम्भर नहि डैक ।
हुनिया कनेक खाओव प्रतिष्ठा करौक । हुनिया ओकव संगक नोभ संरवण नहि कए
सकनि । प्रतिष्ठा कविते बहनि । कशि, ओ घब घुबि गेन बहति । रँक खसगरे
जीवन रिता दित । एहि रँाँच ओकव राँड मवि गेन बहैक । मानूम भेनैक, झुदा
मन मसोसिकए बहि गेन । घब नहि गेन । कहाँदोन ओकवि माय गौरँव रिडिकए
जीवन चना बहन डैक । भाय खनगे कमागखाग डैक । ओ जागत तँ मायारुँ



उसस होगतेक । कहना बहति ! . हुनिया अपन माथ ठेहनपव बाथि मिसकए नगेति थछि ।

थाङ्ग रेबियामे ओकवा मानूम भेनेक जे पूर्णे एतए थाएन बहय । कहाँदोन रनिनियाँक हसियावक खेतमे नुकाएन बहक । पुनिसकेँ खरबि भेठ गेन बहक था चाक भवसँ घेबि कए गौनी रबखा देने बहक । पूर्णे मावन गेन बहय । हुनियাকেँ नगेत छेक जेना ओ ओकरेसँ भेठए थाएन बहक । शायद एहि रेब ओ साँचे ओकवा न' क' भागए चाहित बहए । दूब रहत दूब जतए कोनो भय था त्रास नहि होगक । खानी ओकव संग था बंगरिबंगक बंग होगक । झुदा ओ अमगरे अपने चनि गेन । कहाँदोन ओकव देह नान खूनसँ बंगा गेन बहक । . हुनिया अपन मोठा लोचए नगेत थछि । थाँथिसँ नोबक धाव जोड जोडसँ ठघवए नगेत छेक ।

ओकव हाँक थठाँक थाराज करैत खुनि जागत छेक । हरनदाव भूरोठन प्रवेश करैत थछि । सकपकाएनि हुनिया ठकमका कए ठाढ़ भ' जागति थछि । ओकवा नगेत छेक भेद खुनि गेन छेक । थारँ ओकवा कोङ्ग नहि रँचारँ सकतेक । थरणीय यातनाक दोबसँ गजबए पडतेक । एहिसँ झुजिक एकहिठाँ उपाय छेक जे ओ पूर्णे नग चनि जाय । झुदा कोना ? थारँ एकरो रेब नहि छेक । ओ पबिछागत छागव जकाँ काँपि जागत थछि । . भूरोठन थगाँ रँढ'त छेक । झूहपव हाथ धए ओकवा चुप बहक गशीवा करैति हसहसागत छेक - ' हुनिया, . ङा तोहव साड़'ी छोक । . रिखाहक नान जोड़' ! ! . पूर्णेक जेरूमे बहक । हम मभसँ पहिने नाशि नग पहुँचन बहिर्क । ङा निकानि नेनिर्क । . दोसव जनौक नहि जनौक, हम तँ मभ किछु जने छिठुँक । . तोँ छापामाव तँ नहि झुदा पूर्णेक प्रेमिका थरससे छह ! . तोँ एखने भागि जाह । . नहि तँ कान्हि बोरे तोवा पकड़ि नेतोक । . झुदा एहि मभनेन तोवा एक रेब . खानी एक रेब . हमवा भोगए देरँए पडतोक ! ' भूरोठनक थाँथिमे जेना पिशाच चढ़न बहक । ओ साड़'ी फेनाए देनकेक । हुनियक मन भेनेक ओ साड़'ी छिनि नेखए झुदा से मभुन नहि बहक । . भूरोठन झुसागत थगाँ रँढ'त गेलोक । हुनिया ठाँठदिस घसकैति गेनि । ओकरो थाँथिपव जेना देरी चढ़ि गेन होगक । झूह सेहो रिकवान रँनेत चनि गेलोक । ओ सोचि नेनकि थाङ्ग झुजि नेये क' बहत । ओ पूर्णेनग अपन चूनन स्थानपव चनि जाएति । . ओकव नजबि सँहनपवक नरका छुबीपव गेलोक । ओ छुबी उँठा नेनकि था सोने भूरोठनक पेठमे भोकि देनकि । एक,



दू, तीन, चाबि. । भूनोठन घरबाए गेन । ओ साडी पुनिया देहपव हेलक देनक ।
। आ अपन दहिना हाथसँ पेमतेन निकानि तारडतोड गौनी दागि देनक । एक,
दू, तीन, चाबि. । दूनु हहाकए खसन । . भूनोठन झूहे भरे आ हुनिया साडीमे
ओमबागत !

पवात भेने सभ अखराव घटनाक रिबिषणसँ भवन बहक । किछुमे निखन बहक जे
छापामाव रीवाङ्गना हुनिया शहादत प्राप्त कगनीह, अन्तिम धरि नडत नडत । तँ
दोसबसभमे निखन बहक महिना छापामावसँ झूठभेडमे हरनदाव भूनोठन शहीद भेन
। . छापामाव हुनिया चौधरी मावनि गेनि ।

जयकान्त मिश्रपव रिशेष

१.डॉ. गंगेशि गुजन २. रिद्या मिश्र

डॉ. गंगेशि गुजन

जयकांत राबूक निधुन मैथिली-मिथिला आ मैथिलक एक महान पोथीक पुस्तकानयमे सजा देरौक
ईतिहासिक शोकक अरसब जेकाँ थीक । पोथी, अद्याय नहि, पोथी । सम्प्रति तँ रहत महान म्कति ।
हूनक मौनिकता मैथिलीक लौकिक एरम शास्त्रीय रूझि समरय आ रारहावक अति दूबगामी दृष्टांत रैनन ।
उर्दूक आधुनिक गानिर हिवक गोवथपुत्री गरौंजि छनि

"आने रानी नल्लं तुम से बशक करेगी हम असरो

जरै होगा मानू उरुं तुम ने हिवक को देखा है" ।

हमवा लोकनिक पीढी जयकांत राबूक म्लह शिक्षाक अपन एहि सौभाग्यपव अरुष्ट फितार्थ रैनत । संस्था
सेहो मरि जागत छैक । कितार जरीरित बहत छैक ।

कतोक गोठे केँ संभर जे नहियो कचन्हि हमव ङा कथन झुदा हमवा अपन अंतःकवण सँ ङा कहि
बहन छी जे जयकांत राबू मैथिलीक आधुनिक रेंद छथि !

भागजती काका- डॉ. जयकान्त मिश्रक स्वर्ण



रिद्या मिश्र

हम रूहूत छोटै बही, भविसक स्कूनक दिन छन, जखन कखनहू हमब घबमे अंग्रेजीक रिद्वान, करि, मैथिली लेखकक चर्चा होगत बहए, लोक सदिखन डॉ. जयकान्त मिश्रक चवचा कबिते बहथि । ओ ओहि समयमे हमब सभसँ पैघ मामाजीक साढू बहथि । नेनपनमे हम मैथिन आब मिथिनाक रिकास आ उन्नतिक प्रति हुनकब समर्पण आ साहित्यमे हुनकब योगदानसँ रूढ प्रभावित बही । ओ हमबा नेन आदर्श बहथि..प्रशंसा करी आ सदैर हुनकासँ भेटै कवरौक आ देखरौक नेन नानाघित बही ।

हम अपन स्नातक रिज्ञानक द्वितीय बर्षमे बही जहिया डॉ. जयकान्त मिश्रक सभसँ छोटै रैठौ अपन पितियौतक घबपब धनरौद आधन बहथि । आ हमब रौरूजी तहिया ओतहि पदस्थापित बहथि, से ओ सभ हमरो सभक अहिठाम भेटै कवरौक नेन आधनाह । हमबासँ भेटै कएनाक रौद, गप कएनाक रौद ओ हमब रौरूजीसँ कहनहि...अहाँ किए नहि हमब पितियौत हेमकान्त मिश्रसँ रिनी (हम) क रिवाहनेन प्रस्तार अनेत छी । आ एतए देखू.. हमब डेड हुनका सभ नग प्रस्तार बथेत छथि आ एक मासक भीतरे हम हेमक संग रिवाहित भइ जागत छी ।

जखन हम स्ननहुँ जे हमब रिवाह डॉ. जयकान्त मिश्रक भातिजक संग होमए जा बहन अछि..हम रूढ प्रसन्न भेनहुँ आ शीघ्रहि हुनकब संग हमब सल्लख पविरर्तित भइ गेन किएक तँ हम आरँ ओहि पविरावक प्तोहू बही, रिद्वान आ लेखकक पविरावक ।

हम डॉ. हविरशि बाय रूचनसँ रूहूत नजदीक बही, पत्राचाव माध्यमसँ, हुनकब पवामर्श अरसवपब भेटैए आ पावस्पविक कचि हमबा सभ रूँठी । ओना तँ ओ हमबासँ रूढ पैघ बहथि हूदा तेयो हमबा सभ एक दोसारासँ गप रूँठी आ एक-दोसराक चिन्ता करी, से हम हुनका कहनहुँ जे अहाँ प्रसन्न होएरँ जे हम अनाहारौदक डॉ. जयकान्त मिश्रक भातिजक संग रिवाहित होमए जा बहन छी । हमबा जरारँ भेटैने जे हमब रिवाह एकठौ रिद्वानक पविरावमे होमए जा बहन अछि, ङा रैह छथि जिनका हम अनाहारौद रिश्वेरिद्यानयक अंग्रेजीक रिभागाध्यापक अपन प्रभाव देले बहियहि आ ओ सर्रदा हमबा अपन ग्वक मालेत छथि । आ हुनकब पिता डॉ. उमेशे मिश्रकेँ हम अपन ग्वक मालेत छियहि । ओहि पविरावक ओ जे प्रशंसामेक रर्णन कएनहि से आह्लादकारी बहए आ तकवा सोचैत एखनो हम उहेल्लित भइ जागत छी ।

हम सभ १९९९ ङा मे सहाङ बाज्य अमेरिकामे रूसि गेनहुँ हूदा हमबा सभक हृदय, आबो आ मस्तिष्क सर्रदा अनाहारौदमे बहेत छी आ त्रिरेणीपब नेन सभ कर्मकेँ अन्नभर करैत छी हमबा सभ ओ सभ छोटै-छीन काज करैत छी जे पविरावक प्रति आदब आ प्रेमक भाग अछि । हुनकब समर्पण, पवस्पवा, सबनता आ संस्कृतिक प्रति नगार अन्नकवणीय अछि । हम सभ हुनकब पविरावक हूथिया, ग्वक आ भागजी काकाक रुपमे श्रुति सदैर अन्नभर कवरँ । ङा पविराव आ समाजक नेन एकठौ पैघ श्रुति अछि ।

होनीक संदेश



डा. चन्देश्वर शहा

होनिक बंग खरीबक खेन खेन्नासँ पहिने सम्मत जबाएँ (होनिका दहन) खारशियक होगत छैक । शोस्त्रीय रणन खडि जे भक्त प्रह्लादक रिष्णु भक्तिमकषठ भेन हुनके पिता देरबाज हिवण्यकश्यपु जे सुर्य के ङशिरव मोनत छन, भक्त प्रह्लादके मावि देराक नेन खनेक प्रयत्न कयनाक रौदो जखन असहन होगत गेन तँ अपन रँहिन होनिका के रँवदान मेँ प्राप्त भेन खागिमे नहि जबाएँना चडविक उपयोग करैत अपन सुरार्थ पुवा कबरौक नेन प्रह्लाद सहित खागिमे प्ररेशी कबरौक नेन खात्रो देनक, भगारनक पुपासँ ओ चडवि अपन प्रभारसँ प्रह्लादक बम्का कएनक खा होनिका ओही खागिमे भयम भङ्गेन । एही प्रकारसँ होनिकाक खरसानपव नोक खुशी मनोनक जे एखन एकठा परिक रूपमे समाजमे रिद्यमान खधि । एहि परिक प्रसंग मेँ गएह कथा सम्पूर्ण नहि खडि, खानो कतेक कथा एहि प्रसंगमे कहन जागत खडि तथापि एहि कथाक प्रचाव खान कथासँ खाधिक खडि ।

होनी परिक एहि कथासँ अपना अपना बुँधि रिरैक खनरूप खनेक तबहक सं'देशे ग्रहण कएन जा सकैत खडि । जेना खासुवी प्रवृत्तिक होनिका जे समाजकेँ अपन सुराभार खनरूप खनेक तबहक कषठ दैत छनैक, तकर मृत्यु भेना पव नोक खुशी मनोनक । खर्ति जे किओ रयक्ति समाजमे खन्याय खत्याचाव कबत, समाजक नोक तत्कान यदि रिरोध नहियो करैत छैक तँ तकर ङ मतरँ नहि छैक जे ओ समाज ओकर खत्याचाव सहर्ष सरीकाव करैत छैक । दोसब राँत जे खन्यायी, खत्याचावीकेँ खकान मृत्यु प्राप्त होगत छैक । यदि होनिका प्रह्लादकेँ खागिमे जबाएँराक नेन उद्यत नहि होगत तँ खकानमे ओकर मृत्यु नहि होगतैक । तेसब राँत जे एहि कथाक म्मुख्य पात्र हिवण्यकश्यपु जे अपन धन रँनसँ प्राप्त सुख भोगसँ एतेक माति गेन छन जे ओकरा बुँमागत छनैक जे धनक रँनसँ सरँ किछु सम्भर छैक, ङशिरवकेँ एहि सेँ रँसी की प्राप्त छैक, जे हमवा प्राप्त नहि खडि । जखन सरँ तबहक सामर्थ्य हमवा प्राप्त खडि तखन ङशिरव हमवासँ पैघ नहि खडि, हमही ङशिरव छी । ओ ङशिरवीय सत्राक रिरोध कैबत गेन खा खन्तमे ओकर की दशा भनैक से सरकेँ बुँमने खडि । खर्ति खँकावीक खहम् सरँदिन नहि बहैत छैक । चाबिम राँत ङशिरवीय शिङ्गि खथरा खाशीरदि जँ ककरो प्राप्त होगत छैक तँ ओकर उपयोग जनकन्याशमे कबरौक चाही नहि कि जनरिरोधी कार्यमे । होनिका केँ जे चहवि रँवदानमे प्राप्त भेन छनैक ओहिसँ खागि ओकरा नेन संतापक रँसुत नहि छनैक, पवन्तु जखन होनिका एकर प्रयोग दोसबाक जान नेराक नेन कयनक तेँ ओकर खपने जान चनि गेनैक । एहि तबहँ होनिका खाओव प्रह्लादक खग्नि प्ररेशिक



सन्दर्भमे जे कथा प्रचनित थ्छि ताहिसैँ थनेको संदेशे ग्रहण कएन जा सकैत थ्घि ।

होनीक कथा प्रसंगकेँ ध्यानमे बाधि ओहिसँ संदेशे ग्रहण करैत थपना जीरनमे सहनता प्रापतिक नैन सरकेँ सचेत बहराक चाहि । जेना होनी मनएराक प्रसंग थ्छि जे होनीसँ पहिनका वाति मे सम्यत् जबाउन जाएत । सम्यत् जबाएराक नैन नकडी काठीक जकबत होगत छैक, ङा नकडी काठी कानो एक र्यञ्जि नहि दैत छैक । होनीक सम्यत् जबाएराक नैन ष्टैनक किछ सफिय र्यक्ति कतहकतह सँ नोकक नकडी काठी थ्थरा ओगने चीज उठा कइ चूप्पे थनेत थ्छि । यदि किओ ककरो घब रैनएराक नैन कतो बाथन नकडी नारी कइजबा दैत छैक, चाहे एक गोष्ठाक रँहूत नकडी काठी नइ थरैत छैक तँ ओकब समाजमे केहन प्रभार हतेक ताहि पब ध्यान देराक चाहि । तहिना होनीक दिन परिक दिन छैक । नीक भोजनक नामपब यदि किओ ऋण करैत थ्छि थ्थरा मसतिक नामपब भाँग धखूब, दाब तावीक थधिक प्रयोग करैत थ्छि, त ओकब प्रतिहन सरकेँ देखन नहियो हएत त सुनन जकब हएत, तैँ सचेत बहर सरहक नैन कन्याणकावी रात छैक । तहिना बंग थरीब खेनराक नामपब किओ थनकतवा त किओ गनामेन मनक बंगक प्रयोग कइ रँहादूवी रा मसती करैत थ्छि तैँ प्रयोग कयनिहाबक मसती थ्हा ओही सैँ प्रभारित र्यक्तिक तकनीक कोन थधिक छैक से तवाजू पब नहि जोथन जा सकत, एकष्ठा थन्नभर कबराक नैन नीक भारना बहन ह्रदयक जकबत छैक । यदि किओ कोनो रिमाब, र्यञ्जिकेँ रैनपूरक बंग थरीब नगा कइ ओकब रोग रँटा दैत छैक थ्थरा एहने कोनो थप्रिय काज भाँगक जोशी के करैत थ्छि तँ ओकवा नीक किओ नहि कहतेक । थथति कोनो काज कबराक नैन सीमाक भीतब काज सम्पन्न कबरँ रँहिमानी छैक ।

सरँ तबहक रँन्धन, राधा र्यरधान बहितहँ जेना नोककेँ थपन नम्क्यपब थ्हागू रँठरँ थारशियक होगत छैक, तहिना थपन संसृति पबम्पवाक बम्का थ्हा निबन्तवता देरँ सैँहो दायित्त्र रँनेत छैक । एहने थरसथाक माञ्जदरनि महाकरि रिद्यापतिक एकष्ठा गीतमे थ्छि-

थ्हाजू नाथ एक ब्रत महासुथ नागत हे

तोहँ शिर धक नठरेशे नाँट देथारहू हे ।



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

पार्वतीक एहि आग्रहपव महादेव अपन रात करैत छथिन्ह जे जेँ नाँचरँ तँ शिवक गंगाक धार रहि जाएत धवती जनमग्न भऽ जेतेक, गनाक सर्प चाक दिस जहिँ तहिँ भऽ जाएत अन्धर्त भऽ जेतेक । एहिँ अनेक ब्यवधानक स्वरैत छथिन्ह । ङ सरँठा रात सत्य छै, एहन सम्भर छुनैक झुदा ओही गीतक अंतिम पँकतिमे रिद्यापति निखने छथि जे 'बाखन गौवाक मान कि नाँच देखारन हे ।' अर्थात हमबा सभक फ्रियाकनाप बुँझिमाना पँरक अपन आ समाजक हितमे होयराक चाहि । होनी परँसेँ सरँके ङ सन्देशी ग्रहण कवरँक चाहि ।

सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह - रँलेत-रिगङ्गत

रिरेचना- गजेन्द्र ठाकुर

तीन ठाँ नामित पात्र । माना, ओकव पति सत्रा आ पौती झुनियाँ ।

गाम घबक जे सास-पुतोहूक गप छैक, सेहसुता बहि गेन जे कहियो नहेनाक रँद खाग नेन पुँडितए, एहन सन । झुदा सेह रँठा-पुतोहू जखन राँहव चनि जागत छथि तँ रँह सासु काव कौआक ठाँहिपव चिन्तित होमए नगैत छथि । मागश्रेशिक रँदक गामक यथार्थकेँ चिन्तित करैत अछि ङ कथा । सत्राक संग कौआ सेहो एक दिन रिनाँह जाएत आ झुनियाँ कौआ आ दादा दूकेँ तकैत बहत ।

अपन-अपन दूःख

पनीक अपन अरहेननाक स्थितिसेँ धीया-पुताकेँ सवापैत छथि, बातिमे धीया-पुताक खेनाग आ नेरँ उँतव भनसाघबक ताना रँद बहरँक स्थितिमे पनीक भूखन बहरँ आ पतिक होलाक स्रवसँ रूपित होएरँ सलाभारिक । सत्राक अपन संसार छैक । लोक बुँमेए जे ओकरे संसारक सुख आ दूःख मात्र संपूर्ण छैक झुदा से नहि अछि । सत्राक अपन सुख-दूःख छैक, अपन आशा आ आकम्षा छैक ।

असुबस्मित

छँनसँ उँतवनाक रँद घबक २० मिनठक वस्तु बाति जतेक असुबस्मित भऽ गेन अछि तकव सचित्र रँर्ण ङ कथा करैत अछि । पहिले तँ एहन नहि बँहक- ङ अछि लोकक मानसिक अरसु । झुदा एहि तबहक समझा दिस कररो धान कहाँ छैक । पैघ-पैघ समझा, उँदावीकवण आ की-की पव मीडिआक धान छैक ।



थातंक

प्रवान संगी हविरशिसँ लेखकक भेँठै कार्यालयमे होगत छन्हि । लेखकक दाखिन-थाविज रँना काज एहि नह क२ नहि भेनन्हि जे हविरशिक स्थानानुवर्णक पश्चात् ले का हनकासँ घूस लेनक था ताहि द्वारा काजो नहि केनक । आग कान्हि ऑफिसमे येह हान छैक, पाग द२ दियोक था तखन काज नहि होखए तखन कछ ! हविरशिक रँगेरानी घूसक खनेव पागक कावण छन से दोसब किएक खपन पाग छोडत ? लेखक थातंकित छथि ।

उ नडकी

हॉस्टलक नडका-नडकीक जीरनक रीच नरीन एकठा नडकीक हाथमे एँठ खानी कप, जे ओहि नडकीक था ओकव प्रेमिक छ्छि, देखेत छ्छि । नडकी नरीनकेँ प्छेटत छैक जे ओ केन्लव जा बहन छ्छि । नरीनकेँ होगत छैक जे ओ ओकवा खपनासँ दरँ रूमि कप हेंकराक लेन प्छनक । नरीन ओकवा मना क२ दैत छ्छि था रिचाव सभ ओकव मोनमे घुबमेत बहैत छैक ।

एकठा खलु

सम्बक मूलपव लेखकक साढू केशि कठेने छथि था लेखक नहि, एहिपव कैक तबहक गप होगत छ्छि । साढू केशि कठा क२ निश्चित छथि ।

एकठा प्रेम कथा

पहिले जकवा घबमे हेलन बहैत छन तकवा घबमे दोसबाक हेलन खरैत बहैत छन जे एकवा तँ ओकवा रँजा दिख । लेखकक घबमे हेलन छनन्हि था ओ एकठा प्रेमिकाक हेलन खएनापव ओकव प्रेमिकेँ रँजलैत बहैत छथि । प्रेमी मोर्रागन कीनि जैत छ्छि से हेलन थाएरँ रँन्द भ२ जागत छ्छि । झदा



प्रेमी द्वारा नयन रँदनि नैनापव प्रेमिकाक फोन फ्लेबसँ नैखकक घबपव अरैत अछि । प्रेमिका प्रेमीक मयिचोत रँहिनक सखी वित्त छथि आ नैखक ओकव सहायताक नै नै चिन्तित भँ जँगत छथि ।

एकारी

ह्रसैसव हँस्पीठनमे छथि । हँस्पीठनक सचित्र रिरवणँ भेन अछि । ओतए एकठाँ म्त्री पतिक मूँक रँद कनेत-कनेत प्रायः स्रुति गेनि आ फ्लेब निल्लँ ढँठनापव कानए नागनि । एना हँगत अछि ।

करँड

चस्पीरँनाक नैखक नगँ आएरँ, जँघपव हाथ बाखरँ । अँभिजँन संस्कारक नैकनगँ रँसन बहरँक कावणँ नैखक द्वारा ओकव हाथ हँठाएरँ, चस्पीरँना द्वारा जँ गप रँजरेँ जे छँखन देहकेँ ढुनामे कँन संकोच । नैखककेँ नगेत छँहि जे ओ म्त्री छथि आ चस्पीरँना ओकव पुरँन याव । ठँम-कँठँम आ सभय-कँसभयक महीन सभय चस्पीरँनाकेँ नहि छँग, नहि तँ नैखक ओतेक गवमीयोमे चस्पी कवा नैतए । चस्पीरँनाक दीनतापव अँहसँओच भेनहि हँदा ओकव शी-ग-गँ केँ मोन पाँडँत रिरँष्टा सेहो ।

कावरँव

नैखककँ भँँँ मिस्रँव रँमा, सिन्हा आ दूँ ठँ आब गँओठँसँ सँ हँगत अछि । रँव मे सिन्हा दोस्तुँ आ रिरँजनेसकेँ हँवक कँहँत दूँ ठँ थिसँ स्रनरँँत अछि । सभ चीजक मोन अछि, एहिपव एकठाँ दोस्तुक रागहँ नैन ठँ.री. किरँनाक रँद हँ्रिजक डिमँड अँरँक गपपव रँीचेमे खतम भँ जँगत अछि । दोसव थिसँमे एकठाँ म्त्री पतिक जँन रँचरँए नैन डँकँठँवक हँस देरँक नैन पूरँ प्रेमी नगँ जँगत अछि । पूरँ प्रेमी पागँ देरँक रँदनामे ओकवा संगे वाति रिरँरँए नैन कँहँत छँक । सिन्हा कँथामे ककरो गनती नहि मँलेत छथि, डँकँठँव रिरँना पागँ नैने किएक गनँज कवत, पूरँ प्रेमी मँगनीमे पागँ किएक देत आ ओ म्त्री जे पूरँ प्रेमी संगँ वाति नहि रिरँताओत तँ ओकव प्रेमी मवि जँएतेक ।

अँरँ रँवसँ नैखक निकलेत छथि तँ दवरँनक सनाम मावनापव अँहमे पँसँक ठँनक स्रनागँ पडँ नगेत छँहि ।



हस्त

कथाक श्रावणु बृंगीपवक सुखाएन कडगव भेन दागसँ शुक होगत अछि । ह्नुदा तबहुत स्रुष्ट, होगत अछि जे ओ से दाग नहि अछि रवन घारक दाग अछि । हेब हाँक हस्तमे गामक समझाक निपठावा , हेने सनेक रन्द बहर, ओतए ङठक चोबक चबचा अरैत अछि । छोठ भाग कोनो अनाजक फममे एनोपेथीसँ हठि कए होम्यापेथीपव रिश्यास कवए नगेत छथि, एहि गपक चबचा आएन अछि । नोक सभक घारक समाचाव पुछराँ नइ अएनाग आ नेखक द्वावा सभकेँ रिस्तुत रिबवण कहि सनओनाग ह्नुदा उमबिमे कम रयसक केँक गोठेकेँ ठाँवि देनाग, ङ सभ फम एकठाँ रातारवणक निर्माँ करैत अछि ।

केनरी आगलेन्दक नारन

सुभाष आ उषिया कथाक चबिब छथि ।

रिश्न जेना निर्णय कोसक धसना जकाँ । ममियोत भागक चिष्टी, कठवि देने नाहपव जएराँक, गेकआ पानिक धावमे आएर, नाहक छीठपव उतावर, छीठक राँदो रँहूत दूव धवि जाँघ भवि पानिक बहर । धीपन राँवपव सागकिनकेँ ठेनेत देखि का कहत छन्हि- “सागकिन ससुवाबिमे देनक-ए ? कने रँडद जकाँ छिठकाव दियोक” ।

दीदी पीसा अहिठाम एहि गपक चबचा जे कोठक खातिब हुनकव रेँठीक रिवाह दू दिन ककि गेन छन्हि आ ङहो जे रेँसी पठने नोक रँताह भइ जागत अछि ।

सुभाष चाहियो कइ दू सए ठाँका नहि माँगि परैत छथि, दीदीक रारहाव अस्पष्ट, छन्हि, सुभाष आसुसु नहि छथि आ घुँवि जागत छथि ।

हठ

नेखकेँ अखिनन भेठैत छन्हि । शीनतासँ ओ अपन भेँठक रिबवण कहि सनरैत अछि । पाँचम दिन घुवनाक राँद द्रैनमे ओ नहि भेठनीह । आरँ अखिनन की कवत, रिशाखापतनम आ रिजयराङ्ग क रीचक बसुामे चक्रव काँठत आकि स्रुतिक संग दिन काँठत ।

दाना

मोहन अण्ठबवू नेन गेन अछि, ओतए सद्मदय चपवासी सूचित करैत छैक जे राँहवीकेँ नहि नेत छैक, पी.एच.डी. बहितए तँ कोनो राँत बहितए । मोहनकेँ सभ चीज रीमाव आ उदास नगेत बहए । ह्नुदी आ मैना पारवोठीक धैकड पीव ची-ची करैत नपठैत बहए ।



दृष्टि

पढ्ठ ग्ग खतम भेनाक रौद नोकबीक थोज , गाममे नोकसभक तीम्षा कठाम्फ । हेब दम्फिा भावतीय पत्रकावक प्रेवणाम् कनियाम् रिवोधक रौरजूद गाममे नेखकक खेतीमे नागर ।

नदी

गगनदेरक घबपव रिवारी आएन ड्के । शिवमे ओकवा एक मान बहरौक ड्के । गगनदेरके ओकवा संग मकान थोजरौक फममे एकठा नडकीसँ भेँठ होगत ड्के । ओकवा छोज्जा आगाँ रठन तँ ग्ग रूमनाक रौदो जे आरँ ओकवासँ हेब भेँठ नहि हेतग ओ उल्लास आ प्रेमक अन्नभूतिसँ भवि गेन ।

पवनय

रौकी रूमडेकक अन्नजाबीमे अछि । ऋदा धावमे पानि रठ्ठा बहन ड्के । कौशीक रौद्वि रठन आरि बहन ड्के आ एम्ब माएक बद्-दसुसँ हान-रैहान ड्के । मान-जान भूखसँ डिकरैत बह । वामचवनक घबमे अन्नपानि रेशी ड्के से ओ सभकेँ नाहक अन्नजाम नेन कहैत ड्के । रौकुक घबसँ कठनियाम् दूब बह । मून् आ रिनशि रौकूकेँ कठोव रँना देनकेक, मोह तोज्जा देनकेक । ऋदा रँवथा बकि गेलैक । रौकू चीज सभकेँ चिन्हरौक आ स्रवण कवरौक श्रयने कवए नागन ।

रौत

नेरौ दोकानपव नेरौरना आ एकठा नोकक रौचमे रँहस स्रनेत नेखक रौचमे रौचमे कूदि पड्ठत छथि । नेरौरनासँ एक गोठे अन्न छत्ता माँगि बहन अछि जे ओ नीचाँ बखने बहए ।

दूखक गप, नेखकक अन्नसाव, रेशी दिन धवि नोककेँ मोन बहैत ड्के ।

बंता

बस्तामे एक म्त्री अरैत अछि । नेखक सोचैत छथि जे ग्ग के ड्डी, बस्त्या, मेनका आकि... । ओकवा संग रेशी ड्के, ओतेक स्रन्नव नहि, कावण एकव रव स्रन्दव नहि होएतेक । ओ गपशिपमे कखनो नेखककेँ मस्रव जकाँ, कखनो अन्ननाकेँ हनकव रेशी तुना कहैत अछि । पहिने नेखककेँ खवाप नगनहि । ऋदा रौदमे नेखककेँ नीक नगनहि । ऋदा अन्नमे ओकव पएव ड्करँने नेन म्करँ ऋदा रिन ड्के सोम भन् जाएरँ नहि रूमिमे अएनहि ।

हमव गाम

नेखकक गामक बस्त्या- कठनियाम् मेनली गामक नोकक ड्ज्जा आएरँ, रौन्धक रौचमे अह्विया काँठेते नोक । कौसिकन्हाक नोक- जानरवक समान, जानरवक हानतमे । कठनियाम् नेखकक घब कठि गेनहि से नख्नीयाम् एहिठाम ठिकैत छथि । मड्ठरौहि आ चिड्ठ रँमारँने नेन नख्नी जोगाव करैत अछि । जमीनक नगड्ठ 1- एक हिस्सादावक जमीन धावमे डूमन ड्के से ओ नेखकक गड्ठमरना खेत हडपए चाहैत अछि । शिन आ म्त्रीक ! पाड्ठ नोक रैहान अछि । म्त्रीक पाड्ठ रिन कावणक नेखक पड्ठा गेन छथि । यारत सभ कमनक घूब नग कपक अन्नारमे रँवा-रँवी चाह पिणैत छथि, हसिन कठि कन् सिरँननक एतए चनि जाग-ए ।



मोखा, काम, पठेबक जंगन जखन बहए, चिड़ रँडु खरँए, खरँ कम खरँेत खडि । खरँ या, हबिन, माड, काड, डोका सब खतम भइ बहन डेक- जीरनक साधन दुर्नभ भइ गेन खडि । साँममे जमीनक पछेती होगत खडि ।

सत्राक रँकड १ मबि गेलैक, पुतोह एकब कावण मासुक सवापरँ कहैत खडि । मासु एकब कावण रँनि गडुनोपब पाठीसभकेँ रँचरँ कहैत छथि । सत्राक रँठीक जौरँनक उभावकेँ नेखक पुबष सम्पर्कक साझी कहैत छथि, ओ एखन मासुब नहि रँसैत डेक । सुकन बामक एहिठाम खागत कान नेखककेँ संकोच भेलन्हि, जकबामँ उरँबरँक नेन ओ रँजनाह- खाग तोबा जाति रँना नेनिखह । कोसी सभ भेदभारकेँ पाँटि देनक, डोम, चमाब, रूसहब, दुसाध, तेनी, यादर सभ एके कनसँ पानि भरँेत खडि । एके पठियापब रँसैत खडि ।

कनियाँ-पुतबा

बसुतामे एकठा रँचिया नेखकक पएव छानि हबेव ठेहनपब माथ बाथि निश्चिन्त खडि जेना माएक ठेहनपब माथ बखले होए । जेना चम्पीरना नेखककेँ रँमागय बहन्हि जे हनका हरती रँमि बहन डनन्हि । नेरौ मन कोनो कडगब चीज नेखकसँ ठकरेनन्हि । ई नडकीक छाती छिई । नडकी निरँकाब बहए जेना रँप-दादा रा भाए रँहिन सइ सठन हो । नेखक सोचैत छथि, ई सीता रँनत की द्रोपदी । बारन खा दुर्जोधनक खरँका नेखककेँ घेब नैत डनन्हि ।

(खगिना खँकमे)

३. पद्य

३.१. रसंती दोहा- हमाब मनोज कथुप

३.२. सतीश चन्द्र मा- हमब सुतंत्रता

३.३. ज्याति- एक नाँकरी चाही

३.४. जंगन दिस ! - कपेशि हमाब मा लंख

३.५. पंकज पवाशिव -समयोर्षि

३.६. सुरोध ठाहब-हम गामेमे बहरँग



हमाव मनोज कथप । जन्म-१९७९ ई० मे मधुवनी जिनातकृत सनेमपुव
गाम मे । स्कूनी शिक्षा गाम मे आ उच्च शिक्षा मधुवनी मे । रौना काले सँ लेखन मे आरंभकचि । क्लेक
गोष्ठ बचना आकाशिराशी सँ प्रसारित आ रिभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित । सम्प्रति केन्द्रीय सचिरानय मे
अनुभाग आधिकारी पद पव पदस्थापित ।

रसंती दोहा

गेदा - गुनार - पनाशि संग, हुनन हुन कचनाव ।
चिहकय आहठ पव गोवी, आरि गेना पिया द्वाव ॥

भवन रसंती मास मे, पिया निर्दय रसन पवदेशे ।
अहड - मस्त रसंत, हेव रँड । देने आहड कनशि ॥

धवती सँ मिनन के आहड, ब्याहन भेन आकाशि ।
पिया रिबह मे वाति - दिन, पीयव पडन पनाशि ॥

बंग - अरौव - गुनान सँ, धवती भइ गेन नान ।
गोवी के गान पव जेना, मनन चूठकी भवि गुनान ॥

एहव - ओहव मठकि बहन, पीरि कइ भांग रसंत ।
मन चंचन आङ्ग भइ बहन , कि योगी कि संत ॥

पीरि कइ भांग रसंतो आरि, नागन कवय उपोत ।
धूड । उड । कइ पड । गेन, देमय कान ने कोनो रौत ॥

सखि रासंती तोहि हुनका, जा दय दिहनु संदेशे ।
जी भवि मनरनि बंग हम, भेठता पिया जखन जे भेष ॥

ककवा सँ मोनक राखा कही, रूमत के मोव ठीस ।



स्वनि क२ सभ हँसरो कवत, रँनत के मन-मीत ॥



सतीशे चन्द्र मा, वाम जानकी नगव, मधुरनी, एम० ए० दर्शन शीम्र
समप्रति मिथिला जनता गण्टव कानेन मे राखाता पद पव 10 र्ष सँ कार्यवत, संगे
15 सान सँ खप्पन एकठा एन०जी०३० क सेहो संचानन ।

“ हमव स्मृतवता ”

छी एखनो कमजोव कतेक हम
मौन भेन चुपचाप ठाठ छी ।
किछ रँधन खँछि पवंपवा के
किछ समाज सँ भयाङ्कित छी ।
भेन बही कहिया स्मृतव हम
केना थारि ग रिसवि सकै छी ।
खँछि महान ग पर्रि देशे के,
सर्रि धर्म सर्रि मना बहन छी ।
तखन किये छी हम एखनो धवि
रौखन जवजव पवंपवा सँ ।
झुंज कवत के हेल थारि क'
बद्धि रौदित के पिजवा सँ ।
रिधरा के दूदर्शा, दहेजक
भोगि बहन छी दंश केना हम ।
स्वार्थ धर्म नय पुत्रक माया
केना चनायरँ रँशि खपन हम ।
खँछि सिंघासन उँच पुत्र के,
पारि पिता सँ झह भारना ।
पुत्री नय एखनो खँछि वाखन
खनुशासन, तप, त्रान, साधना ।
डेग-डेग पव नीति समाजक
नाबी के निर्रनता दे छै ।
खँछि स्मृतवता रँनन पुत्रक नय
द्वत भारना उँचित कहाँ छै ।
पढ । नेरँ कतरौ कन्या के,



मार्ग दहेजक नहि किछु कमते ।
खुष्टि रिधुंसक खहं प्रकष के
नारी तेयो चूकू हूँकते ।

एक खाध ठा पारि उँच पद
केना समाजक दंभ मिठैती ।
प्रकष प्रधान समाजक सोमा
के अधिकारक रात उँठैती ।
पडत खुष्टि नहि हूँख मे, प्रकष
जायरँ सुखा केना धवती सँ ।
निज संतान प्रकष खा प्रकषी
खुष्टि उँपेन सरँ खपन बज सँ ।
तखन किये छै रँनन रँाध्याता
कवत कर्म सरँ प्रकष पिता के ।
चनते तखने प्रसु- प्रसु धवि
नाम, रँशी, सम्मान पिता के ।
रँशी चने छै एखनो ओकरे
जे जग मे गतिहास प्रकष छै ।
चनने माखा रँना क खपने,
नुजरँन मे जकवा पौकष छै ।
ज्ञान, धर्म खखरा समाज नय
जे देनके खाहूँति प्राण के ।
खमव रँनन ओ बहत द्रुदय मे,
रँदनि देनक भाग्यक रिधान के ।
कतेक उँपेम्मित खाग रूँह छथि
खपने सँ खपमान पारि क' ।
छुहँ खपने संतान, चकित छथि
पैघ रँनेनथि पानि पोषि क' ।
खल्लक नेन प्राण गेन जिनका
पडन रूँद नहि दूध कँठ मे ।
भोज भेन भारी पवगला
गाय दान भेन श्राद्ध कर्म मे ।

रँतमान रिंतनहि रिपदा मे,
की कवता पवनोक रँना क' ।



कतेक धर्म अर्जित क सकता
अंत समय मे रेद सुना क ।
एथनो मंदिर के अंगन मे
प्रथा देरदामी अछि निन्दित ।
छथि पाथव के देर, नीक अछि,
की कबता भ' क' स्पंदित ।
जौं बहितहुँ एथनहुँ अतंत्र हम
ने बहिते ग दशो समाजक ।
अंतहीन अछि एकव कहानी
पन्ना किछ पढ़ि यो गतिहासक ।

ज्याति

एक नाँकवी चाही

एक नाँकवी के तनाशमे छी
जतय काज हुए अपन मानेक
समय पब जाय अरैके नेन
नहि कथना जे चले आनक
जगह हाये महन मन आइ
रौस हुअय अपन पसन्दक
आहव एरम् रहिब हाये आ
महिना के नहि भेटै गव् अरसब
रेतन तइ तेहेन शानदाव हुए जे
ननायित बहे दुनियाके सरँ मिनियनेयब
कम्पनीके कर्ता धर्ता हम रानी
रौस अनुसवण करै हमव आत्ताक



बाजे खाँफिस खाँरेनेन सेहा तेयाव छी
जँ ब्रुक हाये खाकेब बितेशे देशेकथक
रात सुनारक हिम्यत नहि करै
झुझागत बहै हमब सरँ रात पब
खेब रिश्नास नहि ताडे कथना
दबमाना नहि बाके कम्पनीके रँदा भेना पब

जंगन दिस ! – कपेशी क्माव ना 'साँथ'

कम नहि, नागन छन लीड रैस
सूर्य उगन, हाँठन क्हेस
तकणी-तकणक एकठा जोड़ ।
घूमि बहन छन ग्वा एनोड़ ।
चम्पा साजन दू केब माथ
बखने एक दोसबक हाथ मे हाथ
हिप्पी देखि नागन तकण खपाँठक
जूता छनैक खेबेन हाँठक
जिंस नगौने खाँव ठी शीँठ
देखि मोन कहनक री एनँठ
तकणीक केशी रौँ कँठक
खाँगत चनेत छन चँठक-मँठक
रँढत चनि जाँगत छन सीना तनने
तकण प्रेमिक संग गप्प नडने
तकणी देह पब छनैक रस्त्र कम
तकब ने छनैक ओकवा गम
चनेत-चनेत भेन ठाँठ दू
मोने सोचन एना नोक चनेँछ हनू
धेनक एक दोसब केँ भवि पाँज
देखि क२ हमवा भ२ गेन नाज
झँह घूमा पडनियेक-जेरँ२ कोन दिस
राँजन दू एक संग-जंगन दिस !



पंकज पवाशिव,



डॉ. पंकज पवाशिव (१९७७-)। मोहनपुर, रैनराहाठ चपवाँर कोठी, सहवसा। प्राबन्धिक
शिक्षासँ स्नातक धरि गाम आह सहवसामे। फेब पठना रिश्वेरिद्यालयसँ एम.ए. हिन्दीमे प्रथम श्रेणीमे प्रथम
स्नान। जे.एन.यू.दिल्लीसँ एम.फिन.। जामिया मिनिया गन्नामियासँ पी.एच.डी.पत्रकावितामे स्नातकोत्तर डिप्लामा।
मैथिली आह हिन्दीक प्रतिष्ठित पत्रिका सभमे करिता, समीक्षा आह आलोचनामेक निरर्थक प्रकाशित।
अंग्रेजीसँ हिन्दीमे कनाद नेरी स्ट्रॉस, एरहार्ड बिश्व, हफ शोह आ ब्रूस चैठरिन आदिक शोध निरर्थक
अनुवाद। 'गोरध ओव अंग्रेज' नामसँ एकठा स्वतंत्र पौथीक अंग्रेजीसँ अनुवाद। जनसत्तामे 'दुनिया मेरे
आगे' सुंभमे लेखन। बघुरीव सहायक साहित्यपत्र जे.एन.यू.सँ पी.एच.डी.।

समयोर्षि

(शैक्षिक रिबन्ध मनुष्यक संघर्ष रसुतः रिस्मृतिक रिबन्ध स्मृतिक संघर्ष थिक। *मिनान*
हंदेवा, “द रूक ऑफ नाउडव एंड हॉवगेठिंग”)

एहि दिराकानीन वातिमे कछमछ करैत हज्जि छु हेरौ धरि

एकठक तकरैत छी नीन-धरन-आकाशि

चिह्न-चुनहनीक आराज सुनरौ नए आहन

भोककरौक खोज कवरौ नेन होगत अछि ठाठ

नगैत अछि अजगबक हॉसमे रहबि बहन अछि प्रकाशि

निशोकानीन दिरसमे शिद्ध-सूब सरै

मन्नानित-कन्नानित-शिद्धानित करैत निस्पृहतासँ

प्रवर्षित करैत अछि अरचेतनमे कूठशिद्धाधिकार



माह्रभाषिक संसावमे नहानोष्ठ होगत नेखनी घामे-घाम भेन

खंततः भ जागत खड्डि ठाठ

एक-एकठा शिद्धकेँ निकतीपव जोथेत

भ्रतकरीथीसँ दबिद्वरीथी धवि पसवन एक दिस देरौनमे

तीन दिस ठाठ ठाठ करैत भ्रतकगण

सहस्रा रषसँ आग धवि ओहिना पडत छथि देखाव

पातंजनिक आँथिमे खचित “रूडीभूतं रूषनरूनभिति”

सोतिपुवा आ खग्रहावक रौहव जन्म नेरौक

खलिशापित कानक साँघातिक दंड भोगेत

आदि सन्ततक खंत प्रकष आगयो भोगेत खड्डि आयाचावक

दाकण खवणाचाव

सम-आचावसँ बहित समाचावक नूतन प्रचावक सरँ

मन्वख रिरौधी नराचावक निधोख करैत खड्डि गोर्यरून्स केव शीनीमे प्रचाव

कान-नियन्त्रक म्फुधित म्फुधाप्रति केव अमंथ्य प्रतिप्रति

रौखागत खड्डि मिथिनाक गाम-गाममे भस्म, भोज्य, चोष्य आ नेघक

साँगीतिक ग्णान्तराद करैत



उन्नत सञ्चताक सांस्कृतिक साँनमे धर्मधारी रिशिष्टाद्विती प्ररचनकर्ता
रिषय-कीर्तनक रिशेष कीर्तन करैत खडि सर्रथा रिशिष्ट शैलीमे संपादित
रिशिष्ट कम्पक रिशिष्ट ऋणमे सोमवसमे वंजित

बुद्धा पृथ्वीक खाँथिमे उमडत सङ्गदार्मि

खादि प्रकषक लोवसँ खाओव होगत खडि लोनछाह

खादि नावीक वजसँ पाठन खडि उन्नत सञ्चताक घृणाछादित वजाकाशि

वजात सञ्चताक रिन्नपु सबस्रतीमे खहनिशि कलैत खडि

द्वावरँगक दू ठा माछ

मञ्जुप्रेमी द्वावरँगी सामन्तु खा महाबाज मञ्जुपत्तोगतक नेन

खाहन-रानहन हन-हन के मञ्जुक रिना कोनो मासेर्यक

करैत बहन खडि शिकाव

शिकावित जीर सर्रहक खाँतनादी हाहाकावसँ

पविपुष्ट होगत बहन खडि खाँथेठक सर्रहक फ्रुवामो

एहि दिराकालीन वातिमे शिकावित जीर सर्रहक हत खामो



पुष्टैत अछि अपन-अपन अपबाध

जैजैरन्ती बागमे निष्ठात गतिहास-प्रकथन रैव-रैव

उरूप्वीक दाकष जीरनक राथोपकथनसँ द्वाबरंगी माछक

अशुपूवित आँखिमे अलवि अरैत अछि ऐतिहासिक सन्तताक सांस्कृतिक बजपात

असंख्या मन्वखक बजसँ पाठन द्वाबरंगमे रनेत बहन

उजड़त बहन रून्तुम्भित सायाज्य

उरूजाक भातिज सरहक बजसँ शमित करैत बज-पिपासा

उर्मिन नदीक कोवमे खेनागत माछक प्राणांतक कथा

नहि कहत द्वाबरंगक मत्स्यभोगी गतिहास-प्रकथ

साउन मासक बातिमे जागि कए प्रात करैत

भुतकरीथीक नोकक राथा नहि कहत काप्रकथ जयदेर

एहि दिराकानीन बातिमे पातंजनिक राँठ तकेत

रिदा होगत छी भिनसरे-भिनसव बाजघाँठ दिस

निबन्धव नंग अरैत शिखारिमे डरैत असंख्या माछक ऐतिहासिक अशुपूवितमे



कठैत बहैत अछि हमर हृदय-सिन्धुक पाठ !



स्वरौध ठाकुर

हम गामेमे बहरंग

बही दूर अपन माठिसँ मेनेजब बहि-बहि कबुशिय

छोड़ि अपन गाम मन बहि-बहि रिहसए

उ सुन्दर मनभारन पोखरिक घाठ

उ रसंत खाब सारनमे सुन्दरि पारनिहाबनिसँ सजन राठ-घाठ

रंगियामे सदिखन कोयनी कूकए

बही दूर अपन गामसँ मेनेजब बहि-बहि कबुशिय

अछि स्वरौधक कामना, जूनि कक दूर आरि पत्रकेँ माँ

अहीक सानिध्यामे बहए नेन मन तबसए,

छोड़ि अपन गाम मन बहि-बहि रिहसए ।

रौनारनां प्रते- 1. मध्य-प्रदेशी यात्रा आ 2. देरीजी- ज्ञाति मा चोधवी

1. मध्य प्रदेशी यात्रा



पाँचम दिन :

27 दिसम्बर 1991 . :

कालिक नञ्जा पदयात्रा खा देव वातितक फिल्म देखनाक कावण खागव भारे उठैमे रँहूत खानस रूमागत छन । तेयाे हमसरँ साठे छह रँजे खपन सामान संगे खागाँक यात्रानेन पूर्णतः तेयाेव छनहँ । खाग हमवा सरँके जरँनपुव पहँचक छन । हमव सरँहक यात्रा रँस सह कवीरँ सात रँजे भारे पूवा ँवँभ भेन । वस्तुाभवि पूवा ँध्रुतिक दृष्या के निहारैत बहनहँ । हमव गच्छाँ अछि जे अहि स्थानक शिहवीकवण नहि हाे गव नेकिन पता चनन जे रँट्टाँ या रँट्टाँ या हाेठैनक रिकामक पूवाफियाँ चनि बहन छै । हम करि भुरानी पूवासामदक बचनाँ 'सतपुवा के घने जंगन' पढने बही । खाेहिमे करि सतपुवाक रन के सघनताक जेहेन रर्णन केने छथि से अक्कवशः सत्य पूवातीत हाे गत छन ।

जरँनपुव पहँचिकहँ सरँ फिल्मक राँत करैत बहै । हमहँ सुनैत बही । पता चनन जे फिल्म 'पतुख के हून' अभिनेत्री वरीना ठँलुन के पहिन फिल्म अछि खाँ अकव गानामे झँझुगर्के पूवा पूवासिंह सडक सरँहक नाम अछि ।

2.देरीजी :

देरीजी : महिना दिस

महिना दिस के अरसव पव देरीजी के रँट्टाँ या अरसव भेठैन छनैन भावतीय महिनाक सम्मान पव राँत कवक । खाे सरँ रिद्यार्थी सरँनग खपन राँत अहि न्नाके सह पूवा ँवँभ केनी ' यत्र नार्येसु पूज्यन्ते वमन्ते तत्र देरता' अर्थाँ जतय स्त्रीक पूजा हाेयत अछि तते देरताक निराम हाेयत अछि । देरीजीके अन्वसारे गव राँत अक्कवशः सत्य छन ।

हूकव कहँ छन जे स्त्री सरँ तवहे शक्तिशाली खाँ सम्मम अछि तखनाे खाे समाज मे दूतिभारनाक मावि मेनेत खाँरि बहन अछि । यद्यपि खाेकेव स्थिति दिनाेदिन सुधवि बहन छै तेयाे अहि समझाक पूर्णतः उन्नूनन आरथक अछि । कतेक जगह रँचा जे जन्माने नहि बहैत अछि तकव निंग पविष्कण कहँ गर्भेमे मवरा देन जायत छै जँ मातर्पिताके पता चले छै जे रँचा स्त्री अछि । गव रँडका जघन्य अपवाध हाेयत अछि जाँरै गव नहि स्थिति बहैजे राँनिका संख्या रँसी हाेये



अर्थात् डेमाग्राफिक रेसियाे गडरूड ियन हाेये रा चिकित्सक कानोे अतिशय दुःखद कावणरस एहेन सनाह देथ । रौन रिराह दहेज समञ्चा सतीपूवाथा रिधरा के सरू सुथ स२ रूंचित केनाग पढ ाग्व के रूवाररूव सुरिधा नहि भेठैनागर् महिना संगे दूररहाव थाव जाने कार्नेकाने तबहक दुःख के स्त्री मेनेत आरि बहन अछि । नेकिन अहि सरू राधाके रौदाे स्त्री पूवात्येक स्केत्रमे अपन स्थान रूनारूैत बहन अछि । जतय कता आकेवा माका भेठैने आे सारित केनक जे आे ककवाे स२ कम नहि अछि । आ२ माका भेठैके काने रौत छे रूहूत जगह आे शुक्रथात क२ गतिहास निर्माण सेहाे केने अछि । उदाहरण नेन शीमति किवण रेदी के निय२ जे भावतके पूवाथम महिना आग पी एस आ२हसब छथि । हुनका कहन गेन बहन जे स्त्रीके अतेक शारीरिक पविश्रम रना काज नहि कवरूक चाही नेकिन आे आवामक पद छाडे आग पी एसक पद पव अपन ऋमता सारित केनेथ । रेचेंद्री पान भावतके पूवाथम महिना परूतावाही छेथ जे माडुंष्ट एरवेसुंष्ट पव चठन छनेथ । तहिना भावतीय मूनके सुनीता रिनियम्स र अन्ध महिना अंतविष्कक यात्रा क२ बहन छेथ । भावतीय बाजनीति के सराचे पद बाहूँपती पूवाधानमंत्री एरम् ऋथयमंत्री तकके पद के स्त्री सम्मानित क२ चूकन छेथ ।

अहि तबहे आे सरू तबह स२ प्रकषक रूवाररूवी क२ सकैत छेथ नेकिन रूहूत जगह प्रकष हुनक रूवाररूवी नहि क२ सकैत छथि । जेना रूँचाके अपन गर्भमे बाथिक२ रिक्सित करैके आशीरूाद भगरान स्त्रीये के देने छथिन । माडनिंग आ२ फेशेनक दुनियामे अथनाे महिनाक रौने रौना छे । नेकिन अकवा रिवासक नशा कहरूक चाही जे आधुनिकताक धून मे स्त्री अपन रासुरिकता के रिसवि गेन अछि । नाके रिराह आ रूँचाक जन्म देरूँ स२ दूब हुथ नागन अछि । स्त्रीमे ग्व ऋमता छे जे आे पाविराविक आ रारसायिक जीरनमे सामञ्जस्य रूना सकैत अछि । ते आेकेवा समान अधिकाव भेठरूक चाही । संगहि स्त्रीयाे के चाही जे आे समाज रारस्थाके अन्वशासनके एकदम स२ नहि रिसरूै ।

तकव रूाद गहाे आरथक अछि जे स्त्री एक दासेव के मददि करैथ । जत२ अपना कमी नगनेन से अपन रूँठी पतहू के नहि हुथ२ देखिन । समाजमे स्त्रीक स्थिति सुधावक येह वस्तु अछि । देशेमे कानूनक कमी नहि अछि । सरू तबहक कानून छे नेकिन तेयाे स्त्रीक हानत आन देशे स कनि पिछुडने रूँमायत छे । अहि के नेन स्त्री शिक्षाके रूँठ रूँके आरथकता अछि जाहि नेन घबक स्त्री रूँसी रूँठि या काज क२ सकैत छेथ अपन रूँचा सरूके पढनेन पूवाेवित क२ ।

देरीजी कहनथिन जे भावतमे सरूदा स्त्रीके सम्मान भेठन छैन । कहन गेन छे 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् माता एरम् मातृभूमि स्वर्गा जकां पूजित हाेएत अछि । भावतमे आदिकान स२ अनेकाे देरी के दुर्गा सबसुती नम्मी रा



अणु कपमे पूजन जायत अछि । तेँ आे सरँके कहनखिन जेे अनीकेे पूवाति समान
भावतीयताक सरँस२ पेघ निशानी अछि । अहि पवस्पाके निरहि कवक अणुवाधे करैत
आे अपन रक्तुरा समाप्त केनी ।

रँचा नोकनि द्वावा अणुवणीय श्लोक

१. प्रातः कान ब्रँह्महृत् (सूर्योदयक एक घंठा पहिने) सरँप्रथम अपन दूनु हाथ देखरँक
चाही, आे ङ श्लोक रँजरँक चाही ।

कवाग्रे रसते नश्मः कवमण्यु सबस्रती ।

कवमूने स्थितो ब्रँह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नश्मः रँसत छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मूनमे ब्रँह्मा स्थित छथि ।
भोवमे ताहि द्वावे कवक दर्शन कवरँक थीक ।

२. संध्या कान दीप नेसरँक कान-

दीपमूने स्थितो ब्रँह्मा दीपमण्यु जनार्दनः ।

दीपाग्रे शँकवः प्राकतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मून भागमे ब्रँह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिणु) आे दीपक अणु भागमे
शँकव स्थित छथि । हे संध्याज्याति ! अहाँके नमस्काव ।

३. सुतरँक कान-

वामं स्कन्दं हनुमंतं रैनतेयं वृकोदवम् ।

शयने यः अवेग्लिं दूः स्रप्लस्रु नथति ॥

जेे सभ दिन सुतरँसँ पहिने वाम, क्मावस्रामी, हनुमान्, गकड आे भीमक अणुवण करैत
छथि, हनकव दूः स्रप्ल नथुं भ२ जागत छन्हि ।

४. नहरँक समय-

गणुं च यणुने चैर गोदारवि सबस्रति ।



नर्मदे सिन्धु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं ह्रक ॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सबस्रती, नर्मदा, सिन्धु खाऽ कारेवी धाव । एहि जनमे
खपन सान्निध्या दिख ।

३. उतुवं यसेद्दक्ष हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्षं तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सद्दक्षक उतुवमे खाऽ हिमानयक दक्षिणमे भावत खड्दि खाऽ उतुका सन्तति भावती
कहरेत छथि ।

७. खहना द्रौपदी सीता तावा मल्दादवी तथा ।

पशुकं ना स्मरेन्नितं महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन खहना, द्रौपदी, सीता, तावा खाऽ मल्दादवी, एहि पाँच साङ्गी-स्त्रीक स्मरण
करेत छथि, हुनकव सभ पाप नष्ट, भऽ जागत छन्हि ।

१. खश्विथोमा रिनिर्यासो हनुर्माश्च रिभीषणः ।

प्रपः पशुवामश्च सन्तते चिबङ्गीरिनः ॥

खश्विथोमा, रनि, र्यास, हनुमान्, रिभीषण, प्रपाचार्य खाऽ पशुवाम- ई मात ई चिबङ्गीरी
कहरेत छथि ।

+ साते भरतु स्वप्रीता देरी शिखर रासिनी

उतुनेन तपसा नङ्गा यथा पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साङ्ग्य सतामस्तु प्रसादान्तुस्य धूर्जटेः

जाह्नरीफेननेखेर यगृधि शशिनः कना ॥

६. रानोऽहं जगदानन्द न मे राना सबस्रती ।

खपूर्णे पंचमे रर्षे रर्ष्यामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्मित मंत्रशुकन यजुर्देद खधाय २२, मंत्र २२)



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

खा ब्रह्मन्निष्ठा प्रजापतिवद्भुविः । निर्लोकता देवताः । स्ववाङ्कृतिस्तुन्दः । षड्जः स्वः ॥

खा ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरर्चसी जायतामा वाष्ट्रे वाङ्ग्यः श्वरेऽगषर्याऽतिर्याधी मंहावथो
जायताऽदोग्धी धेन्वरोतान्दरानाऽशुः सपुः प्वबन्धियेरा जिष्णु वथेष्ठाः सन्नेयो
हरास्य यजमानस्य रीरो जायता निकामे-निकामे नः पर्ज्या रर्यत्तु फनरवा न्ऽवधयः
पचात्ता योषेष्मो नः कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सत्त्वाः सत्त्व मनोवथाः । शिव्या र्भ्रिनामोऽस्तु मित्राणाम्दयस्तु ।

ॐ दीर्घाभिर् । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अपन देशमे स्वयोग्या खा सरत्रे रिद्यार्थी उपेन्न होथि, खा श्वुके नशि कएनिहाव सैनिक
उपेन्न होथि । अपन देशिक गाय खुर दूध दय रानी, रवद भाव रहन कवएमे सम्म होथि खा घोड ।
ह्रवित कर्षे दोगय रना होए । म्नीगण नगवक नेत्रु कवरामे सम्म होथि खा हरक सभामे ओजपूर्ण
भाषण देर्यरना खा नेत्रु देरामे सम्म होथि । अपन देशमे जखन आरथक होय रर्या होए खा
उधधिक-रुठी सरदा पविपक होगत बहए । एर एमे सभ तवहे हमवा सभक कनाण होए । शिवक
र्भ्रिक नशि होए खा मित्रक उदय होए ॥

मन्त्रार्थके कोन रस्तुक गडा कवरक चाही तकव रर्णन एहि मंत्रमे कएन गेन थि ।

एहिमे राचकनृपापमानङ्काव थि ।

थन्य-

ब्रह्मन् - रिद्या आदि गुणसँ पविपूर्ण ब्रह्म

वाष्ट्रे - देशमे

ब्रह्मरर्चसी-ब्रह्म रिद्याक तेजसँ हकत

खा जायता- उपेन्न होए

वाङ्ग्यः -वाजा

श्वरेऽ-रिना डव रना

अषर्या- रीण चनेरामे निष्ण

ऽतिर्याधी-शिवके तावण दय रना

मंहावथो-पैघ बथ रना रीव



दोग्धी-कामना(दूध पूर्ण कवण रानी)

धेन्नरौटांनड्रानांशुः धेन्न-गौ रा राणी रौटांनड्र- पेघ रँवद नांशुः -खाशुः -ब्रवित

सपुः ु-घोड १

पवॉन्नि-येरौ- पवॉन्नि- ररतावके धावण कवण रानी येरौ-मन्नी

जिंशु-शेत्के जीतए रना

बॉथेगाः -बथ पव शिव

मन्नेयो-उत्तम सभामे

हराशु-हरा जेहन

यजमानशु-बाजाक बाजामे

रीरो-शेत्के पवाजित कवणरना

निकांमे-निकांमे-निश्चयशकत कार्यमे

नः -हमव सभक

पुर्जगा-मेघ

रर्षतु-रर्षा होए

हनरना-उत्तम हन रना

उषधः -उषधिः

पचातु- पाकए

योगेष्मो-खनशु नशु करेरौक हेतु कएन गेन योगक बम्भा

नः -हमवा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए



त्रिंशत्खक खन्नुराद- हे ब्रह्मण, तमव बाजामे ब्रह्मण नीक धार्मिक रिद्या रंना, बाजन्त-रीव,तीर्बदाज, दूध दए रानी गाय, दोगय रंना जन्त, उद्यमी नारी होथि । पार्जन्य खारथकता पडना पव रर्या देथि, हन देय रंना गाड्ड पाकए, तम सन्न संपत्ति खर्जित/संबन्धित करी ।

रिदेहक मैथिली-खंग्रेजी खा खंग्रेजी मैथिली कोष (गण्टवनेष्टपव पहिन रेंव सच-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्वव खाधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

१.पङ्गी डाठारेंस २.भावत खा नेपानक मैथिली भाषा-रैज्ञानिक नोकनि द्वारा रंनाउन मानक शैली

१.पङ्गी डाठारेंस-(डिजिटल गमेजिंग / मिथिनाम्बरसँ देरनागरी निर्यातवण/ संकनन/

सम्पादन-पङ्गीकाव रिद्यानन्द ना , नागेन्द्र क्रमाव ना एवं गजेन्द्र ठाकुर  द्वारा)

जय गणेशाय नमः

ॐ नमस्य शिरायः

ॐ नमस्य शिरायः

(64) "32"

गागूक माण्डव सँ नन्दीशिरव स्वत राणीशिरव दो खण्डरनासँ गौठि दो । । गागू स्वतः बतिः (41/08) स्वतः बतिः सविसन सँकद दो । । (17/04) (34/06) कद्र स्वता सकवाद ी सँ जाङ्ग दो (04/01) हजौनी सँ बाजू द्दो । । एवं गौठि मात्रिक चह । । (20/05) गौठि स्वतो पवान ऋषिकेशो ठकरान सँ वामकव स्वत राङ्गे दो । । नवयोघ ठकरान सँ रीजी शुचिकवः । । शुचिकव स्वतो थेघः शैध स्वतो श्रितिकव दामोदरो (64/06) कमग्राम सकवाद ीसँ नवपति दो । । श्रितिकव स्वतो बतिकव नासू कौ खोखानसँ महामहो देरादित्य स्वतजीरे दो स्ववगनसँ गंगाधर द्दो । । (5/07) बतिकव स्वता वामकव बरिकव ठोठेका सकगठ ीसँ ली दो । । (4/07) सधुज नाग स्वतो लीम (64/01) हरेशेरवो नवउन सँ गंगादाशि दो । । लीम स्वतो गंगेशेरव बतीशेरवो खनसयसँ म म उपा वामेशेरव दो । (02/01) दविहवासँ बति द्दो । । वामकव स्वतो राङ्गेकः मवउनसँ श्रीकव दो । । (08/07) (43/07) श्रीकव स्वतो दँमे पव उँह्लो माण्डवसँ महो वघुपति दो । । (18/03) महो वघुपति (57/09) स्वता जानपति (264/07) रिभापति नजापतियः सोदापुव सँ महामहो पाचयाय सबरँए स्वत खतू दो खोखान घृष्णपति द्दो । । एवं राङ्गेमात्रिक चह । । राङ्गे स्वता दविहवा सँ साले स्वत सौबि दो । । (11/06) महामहो कीर्तिशर्म स्वतो केशर शिरौ रहेवाथीसँ नड खरन स्वत स्वपनदो परौनीसँ कददोणा केशर स्वता राणे सोले क्लान (38/02) ऋषयः पनिचोभसँ सोसे दो । । (08/05) सकवाद ीसँ जीरेशेरव दोहिम दो । । सोले स्वता सिक कक (35/02) चन्द्र मोगरे सौत्रीकाः सोदवपुवसँ वामनाथ दो । । (18/10) (30/07)



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

बामनाथ स्वता रनिदान सँ तीथ स्वत हिवमणि दौ जननकी सँ भरेशे दौ । । सोले स्वता सिक (35/02) काक चन्द्र मोरे (50/06) सौगीका: सोदवप्परसँ बामनाथ दौ । । (18/10) (30/07) बामनाथ स्वता रनिदान सँ तीथ स्वत हिवमणि हौ जननदीसँ भरेशे दौ । । सोवि स्वतो (32/10) दाशे दिलेकौ पानीसँ बतनपाणि दौ । । (05/04) नवसिंह स्वत श्रीधर ग्नीश्रव गोपाना (31/06) एकहवासँ कचिक दौ गोयन स्वतो बतनाणि

(63)

कद्रपाणि माण्डव मिश्रि गठान स्वत रीव दौ बाडठसँ श्रीमाथ दौ । । (24) बतनपाणि स्वता महाङ्ग (50/05) रिफ्रम (55/03) बाम (53/01) बाम का: खोखानसँ श्रीकव दौ । । (19/04) गंगोवसँ लोन दौ । । बामवान मात्रिकर्क । । पवान स्वतो (96/09) खर्जून कामदेरौ खडीक खोखान सँ रुशे स्वत रेणी दौ । । (20/11) (48/08) माधर स्वतो कचिनाथ: धूसोतसँ धूसोतसँ धूतिकव स्वत हविकव दौ सविसदसँ सुधाकव दौ । । कचिनाथ स्वता (56/10) नर रुशे शिर (52/02) गौरी (35/01) केशेरा पानसँ हविकव दौ । । (10/05) प्राणधर स्वता हविकव सुधाकव (34/02) शुभकवा हविहवासँ (63/05) कद्र दौ (195/01) हविकव स्वतो ग्नाकव (29/01) गाङ्गका: माण्डवसँ खाडरनि दौ । । (18/03) खाडरनि (27/09) स्वतो नवपति (40/07) बरिपति दौ । । रुशे रेणीक: सोदवप्परसँ शिर दौ । । (55/07) डानू स्वताशिर (42/08) खर्जेन (74/04) (26/01) गाङ्गका: माण्डवसँ खाडरनि दौ । । (18/03) (27/09) खाडरनि स्वतो (40/07) नवपति बरिपति कवमहासँ गंगेश्रव दौ । । (02/08) खोखानसँ खाडू दौ । । शिर स्वतो उद्यावण (51/07) काशी सतनथसँ भाषकव दौ: सतनथसँ रीजी मतिकव: ए स्वतो सिधूक ख स्वतो बतनाकव: रूधरानसँ मधूकव दौ खण्डदना सँ सुथे दौ । । बतनाकव (24/04) स्वता हविकव भाषकव (39/09) दिराकव चन्द्रकव (38/09) शकवा: रैनडूँच धवादित्य दौ । । (10/04) भरेहसँ गणपति दौ । । (56/08) भावाकव स्वतो खेप्य: रूधरानसँ शुभरव स्वतदामोदौ रनियसँ नितिकव दौ । । एक रेणी मात्रिक चक्र । । रेणी स्वतो पीतामरव ठकरानसँ कद्र स्वत गाङ्ग दौ (09/10) कद्र स्वतो गाङ्गक नन्हनडव सजोव दौ गोरिनद स्वतो जोव: माण्डवसँ खमतू स्वत हवदत दौ हनन्दहसँ मोरे दौ । । गाङ्ग स्वतो नन्दीपति रैनहवविहव दौ(02/04) हिवद स्वतो (65/06) हविहव:

(64)

हविहव मधुसवरारु (50/02) ठाम (145/03) का: परौनिसँ शिरदत (20/05) देरदत (35/07) स्वतो सदुपाध्याय शिरदतु भरदन्तो: माण्डवसँ गयन दौ । । (20/06) तिसुरीसँ नवसिंह दौ । । सदुपाध्याय (30/08) शिरदत स्वता जानयसँ महिधव दौ । । (72/011) महामसुतकमाधि स्वता सोम (56/09) भोगा जीरे का: यद्गगामसँ गताङ्ग दौ । । हविहव स्वता रदर्न ठकर भमव सकवाठ ी से देरे दौ । । (08/05) चाड ी स्वतो ग्नीश्रव गगोनीसँ रँवाह दौ । । ए स्वतो बतीश्रव (39/10) मतीश्रवौ गगोनीसँ माने दौ । । बतीश्रव स्वता (34/09) भोगे देरो गोठे का: (3/06) खण्डरानसँ मतिश्रव



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

सुत सिधुदो खबिया सँ बरिनाथ दौ । । देरे सुता (63/01) नागे शिर रँटाङ्ग का: सोदवप्त्र सँ शिमदत्त (21/01) हवदत्त सुतो माधरदन्त: सकवाठ सँ फनी दौ माधरदन्त सुतो शुभ दत्त कवमाहासँ माग्ग दौ । । शुभदन्तसुता शिक देरे (85/07) (47/08) सुता नागे शिर महाङ्ग का: (61/09) सोदवप्त्र सँ शिमदत्त (21/01) हवदत्त सुता माधरदन्त: सकवाठ १ सँफनी दौ माधरदन्त सुतो शुभदन्त: कवमाहासँ माग्ग दौ । । शुभदन्त सुता (85/07)शिक देरे सोमा: (47/08) सतनथासँ सिधु सुत बतनाकव दौ (24/07) थपवा बतनाकव सुता पानीसँ द्गादित्य दौ । । (19/07) रँनियासँ वामशर्मि दौ एरम ठ बघुपति मात्रिक चङ्ग । । ठ. बघुपति सुतो धवाधव नम्फमी धरौ पङ्गे नवडनसँ रँरौ दौ । । (08/03) दिराकव सुतो दिनकव: ठकरोनसँ प्रितिकव दौ । । (23/03) थोथानसँ जरीशेरव दौ । । (67/03) दिनकव सुता (60/04) पवम (76/04) रीव (36/05) (56/01) शिक का: तत्रदयासत्रय दविहवासँ कस्मक दौ थन्यो प्रथमा परोक्के दविहवासँ कस्मक सुत मित दौ । । (11/08) (48/04) कस्मकव सुता कचि मित सिधु नन्दका: कनन्दत सिधु नन्दका: कनन्दतसँ सोविसुत गोरिन्द दौ माण्डवसँ रागशेरव दौ । । मित सुता नाथु पाँ महनू मानू का: पानिचोत्तसँ मधकव दौ । । (18/05) मधकव सुता रँनियास सँ कचिकव सुत कस्मकव दौ एकहवा सँ शुकन दौहित्र दौ । । थपवा (14/05) ठ. बघुपति (69/03) सुता रँधरानसँ पवान सुत नावायण दौ रँनियासँ श्री वाम दौ । ।

(65)

एरम् गिक मात्रिक चङ्ग । । गिक सुतो मदपाधय जरीनाथ: माण्डव सँ (25) रँसाडन दौ । । (20/01) सुवपति सुतो थुशीरव: पनिचोत्तसँ हविकव दौ (22/05) गगोनीसँ पौथु दौ । । थुशीरव सुता (65/06) वाम रँसाडन (32/01) दिनु का: (66/08) लवाम जजि टाम दौ (22/03) दाम सुतो (39/03) दाम सुतो (39/05) पाण्क: उचतिसँ माधर दौ । । (06/10) माधर सुतो (68/02) थुचिकव: थोथान सँ शुभे दौ । । (107/01) रँसाडन सुतो (93/06) कचिनाथ गोपीनाथो (132/06) सविसरसँ पवान दौ । । (20/05) रिशेरव सुतो पवान: थोथानसँ हवपति दौ । । (07/09) (36/01) हवपति सुतो (47/05) कडक क: सोदवप्त्रसँ रिशेरव दौ । । (15/06) दवि झुनि दौ । । पवान दौ (20/05) रिशेरव सुतो पवान: थोथानसँ हवपति दौ । । (35/07) सँ हवपति दौ । । 07/09) (36/01) हवपति सुतो (47/05) कडक क: सोदवप्त्रसँ रिशेरव दौ । । (15/06) दवि झुनि दौ । । पवान सुता रँहेवाठ सँ गदाधवदौ । । (07/10) ठ. गदाधव सुतो चाण: सुदङ्ग रँन कदादित्य दौ । । (10/3) कदादित्य सुतो (30/07) होरेक: नाडनसँ हविशेरव दौ । । (10/06) हविशेरव सुता गदाधव जगद्धा मशे देरधव रिसकीवसँ हददन्त सुत होवाङ्ग दौ निवसूतिसँ महिघव दौ । । एरम जरीनाथ मत्रिकसुप्रथा मदपाध्याय जरीनाथ सुता वामचन्द्र पवनामक रँमू (84/106) (85/04) महिनाथ (113/08) वाममद थनिकझा: हविशेमसँ लरदन्त दौ । । (18/08) गाग्ग सुतो केशेर: (27/05) थोथानसँ रिशेरनाथ दौ । । केशेर सुता माग्ग नवहवि (31/08) माग्ग नवहवि (27/06) रँहमप्त्र वानसँ नाक दौ । । (20/09) नाक सुता रँकथारीसँ वरिक्कव दौ । । (12/06) वरिक्कव सुतो सुधकव: थण्ड जाङ्ग दौ । । (09/02) मानिद्धसँ देहवि दौ । । माग्गसुताह पवदरू गोपाना: दविहवासँ रँसू (1123/05) लरशर्मि सुतो रँगूक: हविषवति दौ । । रँगू सुतो रँसूक सोदव म.म वतिनाथ दौ (22/01) मा मा रहेड रँसू सुतो गठ



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

धूमौतसँ बतिकव स्वत हनपति दौ रिनियासँ मधुकव दौ । । हवकु स्वतो भरन्दत एक रिसारन दौ । ।
(22/08) मते स्वता केशीर (76/06) महादे माधर नर कशि बतन का: सतनखा सँ बतनाकव ह्यौ

(66) "25"

(24/05) पानीसँ दुर्गादित्य दौ । । कन्हौनी कहवासँ (29/01) माधर स्वतोद्वनी रिसारनौ (33/01) स्वधाकव
स्वत चान्द दौ रुधनासँ दाशि दौ । । रिसारन स्वता रहेबिठ 11 सोले दौ (07/01) नवहवि स्वतारौवाह
(42/03) राँडरे (48/08) नवडनसँ कोले दौ । । (14/05) सक जीरेश्वर दौ । । (42/03) राँवाह
स्वता लोले सोले गरे चौरका: माण्डवसँ बघुपति दौ तिसूसँ सिधु दौहिददाँ सोले स्वता यद स्वधकव
प्रथ स्वधे महागका: (46/01) थोथानसँ बति दौ । । (16/07) बमापति स्वतो हविहव रैनडच सधबदित्य
दौ । । (10/05) मरेहासँ गणपति दौ । । हविहव (29/09) स्वतो बति: ठकरौन सँ केशीर दौ । ।
(09/05) केशीर स्वता हवदत (43/06) भरदन्त बरिदन्त देरदन्त: (49/04) जजिरानसँ राँनु दौ । ।
बतिस्वत जननकीसँ मतिकव दौ । । (12/01) बतिघव स्वत मतिकव स्वतो ठकरौनसँ केशीर दौ (09/05)
केशीर स्वता हवदन्त (43/06) भरदन्त बरिदन्त (41/05) देरन्त: (49/04) जजिरानसँ राँनु दौ । ।
बतिस्वत जननकीसँ मतिकव दौ । । (12/010) म म बतिघव स्वत मतिकव स्वतो नम्फुमीकव: माण्डवसँ
स्ववसर दौ (22/02) रुजौनीसँ बाजू दौ । । एरँ भरदन्त मात्रिक चक्र । भरदन्त स्वता थोथान
रिशौदा (21/04) थामक स्वतोरिशोक: कव श्रीकान्त दौ (1121/011) थोथान स गोरिन्द दौ । । रिशौ
स्वतो (302/02) गोरिन्द रूध हनधव दौ । । (19/04) पाँ'खु स्वतो हवधव: दवि गिरी दौ । ।
(22/04) गिरी स्वताशिमकरी (39/04) (57/02) माधरा: सोदहव दौ । । (23/10) ह रशिररुन
दौ । । हनधव स्वतो (91/04) थे ध: रितवखा माण्डवसँभाले दौ// (19/10) भानकव स्वतो वामकव: घष्टे
बरि दौ । । वामकव स्वतो मानेक: घुसौतसँ गणक दौ । (20/01) गणककव स्वतो गोष्टि रनि श्रीधव
दौ । । (94/04) रितवका माण्डव सँभाले दौ । । (19/10) भानकव स्वतो वामकव: घष्टे बरि दौ । ।
वामरव स्वतो मानेक: घुसौतसँ गणक दौ । । (20/101) गणकव स्वतो गोष्टि रनि श्रीधव दौ । ।
(94/04) माने स्वतो पीतामरव: (23/08) हवि रिभू दौ (16/03) लोले स्वता चाण (28/04) रिभू पवम
(36/03) नाथुक । (37/02) पन्दहीजनि कद्रपाशिदाँ कश्यम गोत्रे राँवहमपुवासँ हवदिहव दौ । ।
मिमशिक (33/03) रम स्वता रूम्फिकव (50/08) होरे 66/01) जोरे का: तयहनपुवसँ गोपान दौ । ।
24/09) गोरिन्द स्वतो गोपान: पानीसँ कामेश्वर दौ गोपान स्वतो नान्छक: पानीसँ नादू दौ (61/04)
(112/05) नाग स्वतो यशु ड्गक (38/05) राँगे का: माण्डवसँ जीरेश्वर दौ । । एरम राँनु मात्रिक
नहा ।

(67)

वामचन्द्रा पवनामक राँनु स्वतो (84/06) (97/04) दामोदव: कठका सोदवपुवसँ रिशौ स्वत (26) भान
दौ । । (24/05) शौदू स्वता महाग गोनु (17/02) रिशौ (67/05) जीरे पवाना: माण्डवसँ जोव



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

दा । । (07/110) चोरेँ स्वतो शिर धमो । । (253/01) शिर स्वतो कामेश्वरः रैनडूचसँ स्वत
केश्वरदो । । कामेश्वर स्वता पीते सागव रिठूकाः कोगयाव सँ रिनायक दो महो सागव स्वता सद्
भीरे महामहत्तक जेव जाने का रँहेवाठ 1सँ धृतिकव स्वत रौवाहदो दविहवासँ हश्मिर्म्य दो महामहत्तक
(39/07) जेव स्वता पानीसँ सँदुग्वक दो । । (25/01) (35/10) डगक स्वतो बग् शिरो खोखान सँ
जीरे दो । । (20/10) खपवा शुचिकव स्वतो नाले जीरो कवमहा सँ नितिकव दो जीरे स्वता बतन
(29/07) माग् हवयः पनिचोभ सँ धवाङ्ग दो रीवपुव पनिचोभ सँरसी महेश्वर ए उतो कामेश्वर ए
स्वतो बतनेश्वर ए स्वतो नाथू रोक को । । रोक स्वतो धवाङ्गकः माण्डवसँ महामहोपाधय जगन्नाथ
दो निवर्तुति से रिदयाधव दो । । (29/01) धवाङ्ग स्वता ककथानी सकवाठ 1 सँ भीम दो एरँ रिशोमात्तक
चह । । दिशो स्वताकेश्वर म भान्न (88/03) क्रमाव बाजा काः माण्डवसँ गागे दो । । (21/03)
भरदत्त स्वतो कान्हः हविश्रमसँ कचि दो । । कान्ह स्वतो वरि गिबी को रौहान कवमाहासँ शिररशि स्वत
स्वपन दोग्गखान सँ गोरिन्द दो । । गिबी स्वतो क्रने गागे को पानीसँ पौथू दो । । (13/09)
खोखानसँ नवसिंह दो । । गाग् स्वतो महन बंजनो (40/01) (229/07) क्रजेनी से स्वपति दो । ।
(04/04) कद स्वतो बग्कः ए स्वतो कान्हः परौनी सँ महिपतिदो

(68) "26"

कान्ह स्वतो स्वपतिः सकवाठ 1 सँ चण्डेश्वर स्वत देहविदो दिधोय सँ जगन्नाथ दो । । स्वपति
स्वतो रँध मेघो तिसुवीसँ पौथू पौत्र खजे स्वत ग्दिदो ख'जे स्वतो ग्दिकः खण्ड शुभदत्त
दो । । ग्दिसुता कोव पानी दविहवासँ मधुकव स्वतमाग् दो कोयूयावसँ सुधाकव दो । । मान्मात्रिक मिश्र
मान्स्वतो (63/04) भरानीनाथ वामनाथो (32/06) रानी पविहवासँ होवाङ्ग दो । । (22/04) कपन
(49/10) स्वतोसूसूकः पानीसँ केश्वर दो । । (14/04) नाडनसँ कोले दीपा (62/05) जास्वतेव रूधा
(67/03) सुधाङ्गको हविश्रम सँ वति दो । । (16/03) वतिसुतो महागकः (85/02) भाण्डव सँ प्रष्ण
पति दे । । (18/08) प्रष्णपति स्वतो वामपति सरपति (48/01) रूधरानसँ भान्न दो (19/04) तीह
प्रतिनाथ दो । । रूधाङ्ग स्वतो चिकू होवाङ्ग को पनि माने दो (17/011) गोरिन्द स्वतो मानेकः चत
चान्द दो । । 24/07) (28/09) चान्द स्वतो मतिकवः हनन्द महेश्वर दो । । माने स्वतो वामपाणि
वतनपाणि एक महाङ्ग दो । (22/06) जानपति स्वतो वरि (83/08) ठामोदरो रूधपान सँ महेश्वर
दो । । (19/04) महेश्वर स्वता परौनी सँधवाधव स्वत रिशो दो रनि दिनकाणि दो । । होवाङ्ग मात्रिक
चह । । होवाङ्ग स्वता (82/05) देरनाथ काशीनाथ महिनाथाः मवमहासँ वघुनाथ दो (02/08) श्री रत्स
स्वता रौछे (36/08) शिम्ह हवयः दवि कोचे दो (15/01) कोचे स्वतो दुगीदित्य गोनू (53/02) को
गठ धोसातसँ वरिक्क दो । । 19/01 भाण्डवसँ हवदत्त

(69)



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

रौद्धे स्वतो (27/02) भरे कौ खण्डरना सँ नाथ दौ । । (011/06) नाथ स्वता वाम कद हनपतियः
रँभनियामसँ किठौ दौ । । (06/08) खण्डदनासँ बरिक्व दौ । । (13/05) भरे स्वतो वघुनाथः नवडन सँ
रिदू दौ । । (08/02) चन्द्रकव स्वतो (28/10) राँगे ओहवि रँहेवाठ सँ राँसू दौ । । (07/08)
तन्हनपुवसँ बतनाकव दौ । । (80/08) खहवि स्वतो रिदूकः तिसूवीसँ ग्रहेश्वर स्वतदिधदाँ माण्डव सँ
माने दौ । । रिदू स्वता श्रीपति गिवपति (704/07) पाखूकाः पनिचोभसँ महेश्वर दौ । । (20/03)
माण्डवसँ कचिकव दौ वघुनाथ मात्रिक वघुनाथ स्वतो श्री नाथ हविनाथ सोदावपुवसँ मीन दौ । । (16/08)
वाम स्वतो तीमः न वडन सँ दिनकव दौ । । (24/08) दरिहवा सँ हसुमाकव दौ । । (8/01) ती स्वतो
जीरनाथ (62/04) रिश्वरनाथाः रँनि हविखमसँ भरे दौ (25/07) (54/01) नवहवि स्वता (55/06) बरि मरे
(74/02) (31/04) (45/02) हसि मधुकव साधुकव रँहिकव (75/06) (334/09) प्रष्णा सिमरौनी माण्डवसँ
गिवशिरव दौ । । (20/07) गिवशिरव स्वता रिशोवाम हन्रेश्वरवाः हजौनी से चन्द्रकव स्वत मितू दौ
खौखान सँ डानू दौ । । (44/07) भरे स्वतो गणेशः नवडनसँ मेघ दौ । । 1903) श्रुचिका (74/03)
स्वतो मेघः रमनि गशिव दौ । । (06/07) महिपति स्वतो गशिव (51/10) वघुकौ रँनि जयानन्द
दौ । । गशिव स्वता शिदू हनपति (35/08) गौदिका जगतिसँ धाम दौ । । (15/05) राँस स्वतो
धरेश्वरः ए स्वतो धामः सरौनी सँ गशिव वघुकौ (51/01) रँनि जयानन्द दौ । । गशिव स्वता शिदू
हनपति (15/05) राँवस स्वतो धरेश्वरः ए स्वतो धामः सतेनी से महान्दर दौ । । धाम स्वतो भरेकः
तपोरन सँ रिठ दा (52/09) मेघ स्वतो गौरीपति राँवू (136/10) गन्रपतियः माण्डवसँ हनपति
दौ । । (24/05) (31/08) खाडनि स्वतो हनपति सोदा रिश्वरनाथ दौ । । (22/110) मम रिश्वरनाथ
स्वतो गोपीनयः (29/020) रनियामसँ सँ शँकावस्वत प्रष्णा दौ खसयसँ गौती दौ । ।

(70) "27"

(38/03) हनपति स्वतो माण्डकः रँहेवाठ ी सँ पाखू दौ । । (09/04) त्रिपुरे (40/07) पौखूकः पवसंटा
सँ श्री दत्त

२. भावत खा नेपानक मैथिली भाषा-रैज्ञानिक नोकनि द्वावा रँनाओन मानक
शैली

मैथिलीक

मानक

नेखन-शैली

1. नेपानक मैथिली भाषा रैज्ञानिक नोकनि द्वावा रँनाओन मानक उँचावण खा नेखन शैली
खा 2. मैथिली खकादमी, पठना द्वावा निर्धारित मैथिली नेखन-शैली



1. नेपालक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाउन मानक उँचावण आ लेखन शैली

मैथिलीमे उँचावण तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ खन्नुस्राव: पञ्चमाक्षरबालुआत ओ, ए, ण, न एरं म खरैत खडि । संस्कृत भाषाक खन्नुसाव शिद्धक खन्नुमे जाहि रखाक अक्षर बहत खडि ओही रखाक पञ्चमाक्षर खरैत खडि ।

खरैत	खरैत	खरैत	खरैत	खरैत	खरैत	खरैत	खरैत	खरैत
अरुँ	(क)	रखाक	बहरौक	कावणे	खन्नुमे	उ	खाएन	खडि ।)
पञ्च	(च)	रखाक	बहरौक	कावणे	खन्नुमे	ए	खाएन	खडि ।)
खन्नु	(ठ)	रखाक	बहरौक	कावणे	खन्नुमे	ण	खाएन	खडि ।)
सन्धि	(त)	रखाक	बहरौक	कावणे	खन्नुमे	न्	खाएन	खडि ।)
खन्नु	(प)	रखाक	बहरौक	कावणे	खन्नुमे	म्	खाएन	खडि ।)

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत खडि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अधिकशि जगहपब खन्नुस्रावक प्रयोग देखन जागड । जेना- अरुँ, पच, खड, सन्धि, खन्नु आदि । ब्याकवणरिद पन्डित गोरिन्द नाक कहर छनि जे करखा, चरखा आ ठरखसँ पूर खन्नुस्राव निखन जाए तथा तरखा आ परखसँ पूर पञ्चमाक्षर निखन जाए । जेना- अरुँ, चचन, अरुँडा, खन्नु तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकठ बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि । ओनोकनि खन्नु आ कम्पनक जगहपब सेहो अरुँत आ कम्पन निखैत देखन जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किछु स्वरिधाजनक खरथु छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रैचत होगत छैक । झुदा कतोकरेब हस्तलेखन रा झुदामे खन्नुस्रावक छोटसन रिन्दु स्पष्ट नहि लेनासँ अरुँक अरुँक होगत सेहो देखन जागत खडि । खन्नुस्रावक प्रयोगमे उँचावण-दोषक समझारना सेहो ततरए देखन जागत खडि । एतदर्थ कसँ नहकह परखधरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवर उँचित खडि । यसँ नहकह त्रुधरि अक्षरक सङ्ग खन्नुस्रावक प्रयोग कवरामे कतहु कोनो रिराद नहि देखन जागड ।

२. ठ आ ट : ठक उँचावण “व ह”जकाँ होगत खडि । अतः जतह “व ह”क उँचावण हो ओतह मात्र ठ निखन जाए । खानठाम खानि ठ निखन जएरौक चाली । जेना- ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउँखा, ठझँ, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि । ठ = पढ १ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरँ, साँठ, गाठ, वीठ, चाँठ, सीढी, पीढी आदि । उपर्युक्त शिद्धसभकेँ देखनासँ ए स्पष्ट होगत खडि जे साधारणतया शिद्धक शुकमे ठ आ मध्य तथा खन्नुमे ठ खरैत खडि । गएह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो नागू होगत खडि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उँचावण रँ कएन जागत खडि, झुदा ओकरा रँ कपमे नहि निखन जएरौक चाली । जेना- उँचावण : रँछनाथ, रिछा, नरँ, देरँता, रिछू, रँशि, रँदना आदि । एहिसभक स्थानपब फ्रमशि: रँछनाथ, रिछा, नर, देरता, रिछू, रँशि,



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

रन्दना निखरौक चाही । सामान्यतया र उँचावणक नेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि ।
जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतह-कतह “य”क उँचावण “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि निखरौक चाही । उँचावणमे यत्र, जदि, जझना, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरना शिद्धसभकेँ फ्रमशी: यत्र, यदि, यझना, हग, यारँत, योगी, यदु, यम निखरौक चाही ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दू निखन जागत अछि । प्राचीन रतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि । नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि । सामान्यतया शिद्धक शुरुमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिद्धसभक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थाकसहित किछ जातिमे शिद्धक आबन्तामे “ए”केँ य कहि उँचावण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक प्रयोगक मन्दर्भमे प्राचीने पञ्चतक अन्वसवण कवरँ उपहाज मानि एहि पञ्चकमे ओकरे प्रयोग कएन गेन अछि । किएक तँ दूनूक नेखनमे कोनो सहजता आ दूकहतक रौत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधावणक उँचावण-शैली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शिद्धकेँ केँन, हेरँ आदि रूपमे कतह-कतह निखन जाएरँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणीत करैत अछि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन नेखन-पवम्पवामे कोनो रौतपव रँन दैत कान शिद्धक पाछाँ हि, हू नगाओन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहू, ओकवहू, तकौनहि, चोष्टहि, आनहू आदि । झुदा आधुनिक नेखनमे हिक स्थानपव एकाव एरँ हूक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अपनो, तकौने, चोष्ट, आनो आदि ।

१.ष तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशित: षक उँचावण थ होगत अछि । जेना- षडन्त्र (थडयन्त्र), षोडशी (थोडशी), षट्कोण (थट्कोण), रूषेशी (रूथेशी), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।

+.धुनि-नोप : निम्ननिथित अरस्थामे शिद्धसँ धुनि-नोप भ२ जागत अछि: (क)फ्रियान्नीय प्रत्य थयमे य रा ए वृत्त भ२ जागत अछि । ओहिमेसँ पहिने थक उँचावण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ नोप-सूचक चिह्न रा रिकारी (/ २) नगाओन जागत । जेना-



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) नेन, उठए (उठय) पडतौक ।
 अपूर्ण कप : पठ' गेनाह, क' नेन, उठ' पडतौक ।
 पठ२ गेनाह, क२ नेन, उठ२ पडतौक ।
 (ख)पूर्वकानिक ध्रत आय (आए) प्रत्यये य (ए) वृत्त भ२ जागछ, ऋदा नोप-सूचक
 रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-
 पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरै, नहाए (य) अचनाह ।
 अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अचनाह ।
 (ग)मत्री प्रत्यय एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे वृत्त भ२ जागत
 अछि । जेना-
 पूर्ण कप : दोसवि मानिनि चनि गेनि ।
 अपूर्ण कप : दोसव मानिन चनि गेन ।
 (घ)रतमान ध्रदन्तुक अन्त्रिय त वृत्त भ२ जागत अछि । जेना-
 पूर्ण कप : पढत अछि, रजेत अछि, गरैत अछि ।
 अपूर्ण कप : पढ अछि, रजे अछि, गरै अछि ।
 (ङ)क्रियापदक अरमान एक, उक, एक तथा हीकमे वृत्त भ२ जागत अछि । जेना-
 पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरितेक, होगक ।
 अपूर्ण कप : छियो, छिये, छली, छो, छै, अरिते, होग ।
 (च)क्रियापदीय प्रत्यय ह, ह् तथा हकावक नोप भ२ जागछ । जेना-
 पूर्ण कप : छन्हि, कहनन्हि, कहनहूँ, गेनह, नहि ।
 अपूर्ण कप : छनि, कहननि, कहनौँ, गेन२, नग, नगि, नै ।

६.ध्वनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हठिक२ दोसवठाम चनि
 जागत अछि । आस क२ द्रस्य ग आ उक सञ्चलमे ३ रात नागू होगत अछि ।
 मैथिलीकवण भ२ गेन शिद्धक मध्य रा अन्तमे जँ द्रस्य ग रा उ आरए तँ ओकव ध्वनि
 स्थानान्तरित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शनि (शिगन), पानि
 (पागन), दानि (दागन), माटि (मागट), काछ (काउछ), मास्र(माउस) आदि । ऋदा
 तसेम शिद्धसभमे ३ नियम नागू नहि होगत अछि । जेना- बश्मिकेँ बगश्म आ स्वर्धाङ्केँ
 स्वर्धाङ्म नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०.हनन्त()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनन्त ()क आरथकता नहि
 होगत अछि । कावण जे शिद्धक अन्तमे अ उच्चारण नहि होगत अछि । ऋदा संस्कृत
 भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आधन (तसेम) शिद्धसभमे हनन्त प्रयोग कएन जागत
 अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिद्धकेँ मैथिली भाषासञ्चली नियमअनुसार
 हनन्तरिहीन राखन गेन अछि । ऋदा र्याकवणसञ्चली प्रयोजनक नेन अन्तराथक स्थानपव
 कतह-कतह हनन्त देन गेन अछि । प्रसुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नरीन
 दू शैलीक सबन आ समीचीन पक्षसभकेँ समेटिक२ रर्ष-रिग्यास कएन गेन अछि । स्थान
 आ समयमे रँचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनिकी दृष्टिसँ सेहो सबन होर२रना



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

हिसारसँ रर्ष-रिग्यास गिनाउन गेन अछि । रर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषीपर्यन्तकेँ खान भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक त्रान नेरै२ पड्ढा बहन पविप्रेश्कामे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन रिशेषतासभ हर्षित नहि होगक, ताछुदिस लेखक-मन्दन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक कहरँ छनि जे सबनताक खन्सन्धानमे एहन खरस्था किन्तु ने खारै२ देरौक चाही जे भाषाक रिशेषता छँहमे पडि जाए । हमसभ हुनक धावणारकेँ पूर्ण कपसँ सङ्ग न२ चनरौक प्रयास कएनहुँ अछि । पौथीक रर्षरिग्यास कम्का ९ क पौथीसँ किछु मात्रामे भिन्न अछि । निवन्तुव अर्धायन, खन्सन्धान आ रिद्वेषणक कावणे ३ सुधावामेक भिन्नता आएन अछि । भुरियामे खानहुँ पौथीकेँ पविमार्जित करैत मैथिली पाठ्यपुस्तकक रर्षरिग्यासमे पूर्णकपेण एककपता खनरौक हमवासभक प्रयने बहत ।

कम्का १० मैथिली लेखन तथा पविमार्जन महेन्द्र मर्नगिया/ धीरेन्द्र प्रेमर्षि संयोजन- गणेशप्रसाद भर्षुवा३ प्रकाशक शिक्षा तथा खेनकूद मन्त्रानय, पाठ्यक्रम रिकाम केन्द्र,सानोठिमी, भुजपुव सरर्धिकार पाठ्यक्रम रिकाम केन्द्र एरँ जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र, सानोठिमी, भुजपुव । पहिन संस्करण २०३.५ र्रेशीख (२००२ ३.) योगदान: शिरप्रसाद सलान, जगन्नाथ खरा, गोवखरँहादुव सिंह, गणेशप्रसाद भर्षुवा३, डा. वामारताव यादर, डा. बाजेन्द्र रिमन, डा. वामदयान वारकेशी, धर्मेन्द्र रिद्वन, कपा धीक, नीवज कर्ण, वमेशी वङ्गन भाषा सप्सादन- नीवज कर्ण, कपा ना

2. मैथिली अकादमी, पठना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

1. जे शिद्ध मैथिली-साहित्यक प्राचीन कानसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एखन

ठाम

जकब,तकब

तनिकब

अछि

अग्राह



अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठिमा

जेकब,

तेकब

तिनकब । (रैकल्पिक

कपेँ

ग्राह)

एँछ,

अहि,

ए ।

2. निम्नलिखित तीन प्रकारक कप रैकल्पिकतया अखनाउन जाय: भ गेन, भय गेन रा
भए गेन । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाए बहन अछि । कब गेनाह, रा
कबय गेनाह रा कबए गेनाह ।

3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत अछि यथा कहननि रा
कहनन्हि ।

4. 'एँ' तथा 'ओ' ततय निखन जाय जत' स्पष्टतः 'अण' तथा 'अँ' सदृश उच्चारण
अण हो । यथा- देखेत, छनैक, रौखा, छोक अवादि ।

5. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध एहि कपे प्रयोज्य होयत: जेह, सैह, अएह, ओँह, नैह तथा
दैह ।

6. ह्रस्व अकारांत शिद्धमे 'अ' के वृत्त कवरँ सामान्यतः अग्राह थिक । यथा- ग्राह
देथि अरह, मानिनि गेनि (मनुष्य मात्रमे) ।

7. स्वतंत्र द्रव्य 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण अदिमे तँ यथारत बाखन जाय,
किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कपेँ 'ए' रा 'य' निखन जाय । यथा:- कयन रा
कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा जाए अवादि ।

8. उच्चारणमे दू स्वरक रीच जे 'य' ध्वनि स्वतः अरि जागत अछि तकरा नेखमे स्थान
रैकल्पिक कपेँ देन जाय । यथा- धीखा, अढ़ाखा, रिखाह, रा धीया, अढ़ाया, रियाह ।

9. सान्नासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभर 'ए' निखन जाय रा सान्नासिक स्वर । यथा:-
मैण, कनिण, किवतनिण रा मैखाँ, कनिखाँ, किवतनिखाँ ।

10. कावकक रिभक्तिरक निम्नलिखित कप ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे ।
'मे' मे अन्वसार सरखा राज्य थिक । 'क' क रैकल्पिक कप 'केब' बाखन जा सकैत
अछि ।



11. पूर्वाकानिक फ्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' खराय रैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत छि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।
 12. माँग, भाँग खादिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि निखन जाय ।
 13. खर्क 'न' ओ खर्क 'म' क रँदना खन्नसाव नहि निखन जाय, किंतु छापक स्वरिधार्य खर्क 'ँ' , 'एँ', तथा 'ण' क रँदना खन्नसारो निखन जा सकैत छि । यथा:- खर्क, रा खर्क, खँचन रा खँचन, कँठ रा कँठ ।
 14. हनंत चिह्न नियमतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक मंग खकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।
 15. सभ एकन कावक चिह्न शिद्धमे सँठा क' निखन जाय, हँठा क' नहि, संहाञ रिभञ्जिक हेतु हँवाक निखन जाय, यथा घब पबक ।
 16. खन्ननासिककेँ चन्द्ररिन्दू द्वावा र्वाञ कयन जाय । पवंतु ऋदणक स्वरिधार्य हि समान जठिन मात्रा पव खन्नस्वावक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत छि । यथा- हि केव रँदना हि ।
 17. पूर्ण रिवाय पासिसँ (।) सूचित कयन जाय ।
 18. समस्त पद सँठा क' निखन जाय, रा हागहैनसँ जोड़ि क' , हँठा क' नहि ।
 19. निख तथा दिख शिद्धमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।
 20. खक देरनागवी कपमे वाखन जाय ।
 21. किछु ध्वनिक नैन नरीन चिह्न रँनराँउन जाय । जा' ग्रा नहि रँनन छि तारँत एहि दू ध्वनिक रँदना पूर्वरत् खय/ खाय/ खए/ खए/ खाँ/ खँ/ खँ निखन जाय । खकि ई रा औ सँ र्वाञ कएन जाय ।
- ह./- गोरिन्दू ना ९९/५/१७ श्रीकान्त ठाँरुव ९९/५/१७ सुरेन्द्र ना "सुमन" ९९/०५/१७

खरँ 1.नेपानक मैथिली भाषा रैज्ञानिक लोकनि द्वावा रँनाउन मानक शैली खरँ 2.



मैथिली श्रकादयी, पठनाक मानक शैलीक श्रधायनक उपवान्त निम्न रिन्द सभपव मनन कए निर्णय करक।

श्राह

/

श्रग्राह

1. होयरना/ होरयरना/ होमयरना/ हेररना, हेमरना/ होयरना/ होयराक 2. आ/आ२ आ 3. क' नेने/क२ नेने/कए नेने/कय नेने/न/न२/नय/नए 4. भ' गेन/भ२ गेन/भय गेन/भए गेन 5. कव' गेनाह/कव२ गेनह/कवए गेनाह/कवय गेनाह 6. निश्र/दिश्र निय',दिय',निश्र',दिय' 7. कव' रना/कव२ रना/ कवय रना करै रना/क'व' रना 8. रना रना 9. आङ्गन आङ्ग 10. प्रायः प्रायह 11. दूः ख दूख 12. चनि गेन चन गेन/चैन गेन 13. देनखिन्ह देनकिन्ह, देनखिन 14. देखनहि देखननि/ देखनेन्ह	61. भाय भे 62. भाँय 63. यारत जारत 64. माय मे 65. देहि/दएहि/दयहि दहि/दैहि 66. द'द २/दए 67. ओ (संयोजक) ओ२ (सरनाम) 68. तका' कए तकाय तकाए 69. पैरे (on foot) पएरे 70. ताहमे ताहमे 71. पव्रीक 72. रजा कय/ कए 73. रननाय 74. कोना 75. दिनुका दिनका 76. ततहिँसँ	121. जरेनाग 122. जवनाग- जवनाग/जवयनाग 123. होगत 124. गडरैनहि/ गडरौनहि 125. चिथेत- (t o t est)चिथगत 126. कवगयो(willing to do) करैयो 127. जेकवा- जेकवा 128. तकवा- तेकवा 129. रिदेसव स्थानमे/ रिदेसरे स्थानमे 130. कवरयनहँ/ कवरैनहँ/कवरैनहँ 131. हाबिक (उचावण हागवक) 132. ओजन रजन 133. आधे भाग/ आध-भागे 134. पिचा/ पिचाय/पिचाए	181. पहुँचि पहुँच 182. बाखनहि बखनहि 183. नगनहि नागनहि 184. सुनि (उचावण सुगन) 185. श्रद्धि (उचावण श्रद्ध) 186. एनथि गेनथि 187. रिउले रिउले 188. कवरौनहि/ करैनथिन्ह 189. कवरैनहि 190. आकि कि 191. पहुँचि पहुँच 192. जवाय/ जवाए जवा' (आगि नगा) 193. से से 194. हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिउकिउमे हँ कए) 195. हैन हैन 196. हगन(spacious) हैन 197. होयतहि/ होयतहि हेतहि 198. हाथ मटिआयर/ हाथ मटियायर 199. हेंका हेंका 200. देखाए देखा 201. देखाय देखा 202. सतुबि सतुब 203. माहरेँ माहरेँ
---	---	--	--



15. छथिन्ह/ छनन्हि छथिन/ छनैन/ छननि	77. गवरँउनन्हि गवरँनन्हि	135. नए/ ने	204. गेन्रैन्ह/ गेनन्हि
16. चनेत/दैत चनति/दैति	78. रौन्न रौन्नू	136. रँचा नए (ने) पिचा जाय	205. हेरौक/ होएरौक
17. एखनो अखनो	79. चेन्ह चिन्ह(अशुभ)	137. तखन ने (नए) कहैत अछि ।	206. केनो/ कएनो
18. रँठन्हि रँठन्हि	80. जे जे'	138. कतेक गोठे/ कताक गोठे	207. किछ न किछ/ किछ ने किछ
19. ओ/ओ२(सरनाम) ओ	81. से/ के से/के'	139. कमाग- धमाग कमाग- धमाग	208. घुमेनहँ/ घुमउनहँ
20. ओ (संयोजक) ओ/ओ२	82. एखनका अखनका	140. नग नग	209. एनाक/ अएनाक
21. हाँगि/हाँगि हाँगग/हाँगओ	83. भूमिहाव भूमिहाव	141. खेनाग (f or pl ayi ng)	210. अः/ अह
22. जे जे'/जे२	84. सुगव सुगव	142. छथिन्ह छथिन	211. नय/ नए (अर्थ- पविररुतन)
23. ना-नुकव ना-नुकव	85. मठहाक मठहाक	143. होगत होग	212. कनीक/ कनेक
24. केनन्हि/कएनन्हि/कयनन्हि	86. छुरि	144. का कियो	213. सरँहक/ सभक
25. तखन तँ तखनतँ	87. कवगयो/ओ करियो	145. केश (hai r)	214. मिना२/ मिना
26. जा' बहन/जाय बहन/जाए बहन	88. पुरावि पुराग	146. केस (cour t -case)	215. क२/ क
27. निकनय/निकनए नागन रँहवाय/रँहवाए	89. मगड़ 1- माँटी मगड़ 1- माँटी	147. रँननाग/ रँननाय/ रँननाए	216. जा२/जा
28. ओतय/जतय जत'/ओत'/जतए/ओतए	90. पएरे-पएरे पेरे-पेरे	148. जरेनाग	217. आ२/ आ
29. की हूडन जे कि हूडन जे	91. खेनएरौक खेनेरौक	149. हवसी हसी	218. भ२/भ (' हॉन्टक कमीक द्यातक)219. निखम/ नियम
30. जे जे'/जे२	92. खेनाएरौक	150. चवचा चर्चा	220. हेबँठअव/ हेबँठयव
31. कूदि/यादि(मोन पावरँ)	93. नगा'	151. कर्म कवम	221. पहिन अशुभ ठ/ रौदक/रौचक ठ
32. गहो/ओहो	94. होए- हो	152. डुरँरँय/ डुमारँय	
33. हँसए/हँसय हँस'	95. रँमन रँमन	153. एखनका/ अखनका	
34. लौ आकि दस/लौ किरा दस/लौ रा दस	96. रँमन (संरौधन अर्थमे)	154. नय (राकाक अतिम शिछ)- न'	
35. मास-ससुव मास- ससुव	97. येह यएह	155. कएनक केनक	
36. छह/सात	98. तातिन	156. गवमी गर्मी	
	99. अयनाय-		



<p>छ/छः/सात 37. की की/की२(दीर्घाकावाप्तमे रर्जित) 38. जरारं जरारं 39. कवयताह/कवयताह करेताह 40. दनान दिशि दनान दिशि 41. गेनाह गयनाह/गयनाह 42. किछु आव किछु ँव 43. जागत छन जाति छन/जेत छन 44. पहुँचि/भेष्टि जागत छन पहुँच/भेष्ट जागत छन 45. जरान(हरा)/जरान(होजी) 46. नय/नए क/क२ 47. न/न२ कय/कए 48. एखन/अखने अखन/अखने 49. अहीकेँ अहीकेँ 50. गहीव गहीव 51. धाव पाव केनाग धाव पाव केनाय/केनाए 52. जेकाँ जेकाँ/जेकाँ 53. तहिना तेहिना 54. एकव अकव 55. रहिनउँ रहनोग 56. रहिन रहनि 57. रहनि-रहिनोग रहिन-रहनउँ 58. नहि/ने 59.</p>	<p>अयनाग 100. निन्न- निन्द 101. रिन्न रिन 102. जाए जाग 103. जाग(i n di f f e r e n t s e n s e)-l a s t w o r d o f s e n t e n c e 104. छत पव अरि जाग 105. ने 106. खेनाए (pl ay) खेनाग 107. शिकागत- शिकायत 108. ठप- ठप 109. पठ- पठ 110. कनिए/ कनिये कनिणै 111. बाकस- बाकशि 112. होए/ होय होग 113. अउँवदा- अवदा 114. रूमनहि (di f f e r e n t m e a n i n g - g o t u n d e r s t a n d) 115. रूमनहि/ रूमयनहि (u n d e r s t o o d h i n s e l f) 116. चनि- चन 117. अधाग-</p>	<p>157. रबदी रदी 158. सुना गेनाह सुना/सुना२ 159. एनाग-गेनाग 160. तेनाने येवनहि 161. नए 162. डरो डरो 163. कतह- कही 164. उमबिगव- उमबगव 165. भविगव 166. धोन/धोखन धोएन 167. गप/गप्प 168. के के' 169. दवरज्जा/ दवरजा 170. ठाम 171. धवि तक 172. घुवि नौष्टि 173. खोवरैक 174. रहु 175. तौ/ तू 176. तौहि(पद्यमे ग्राह) 177. तौही/तौहि 178. कवरागए कवरागये 179. एकेष्टा 180. कवितथि कवतथि</p>	<p>222.तहि/तहि/ तधि/ ते 223.कहि/कही 224.तंग/ तग 225.नंग/नग/ नधि 226.ह/ हग 227.छधि/ छै/ छैक/छग 228.दृष्टिँ/ दृष्टियेँ 229.आ (come)/ आ२(conjunct i on) 230. आ (conjunct i on)/ आ२(come) 231.फनो/ फनो</p>
--	--	---	--

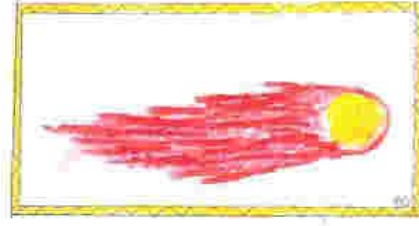


कवर्ौ/कवर्ौय/कवर्ौए 60. त/त २ तय/तए	खधाय 118. मोन पाडनखिन्ह मोन पावनखिन्ह 119. कैक- कएक- कगएक 120. नग नग		
--	--	--	--

English Translation of Gajendra Thakur's (Gajendra Thakur (b. 1971) is the editor of Maithili e journal "Videha" that can be viewed at <http://www.videha.co.in/> . His poem story, novel , research articles, epic - all in Maithili language are lying scattered and is in print in single volume by the title "KurukShetram" He can be reached at his email : ggajendra@airtelmail.in)**Maithili Novel Sahasrabadhani by Smt. Jyoti Jha Chaudhary**



Jyoti Jha Chaudhary, Date of Birth: December 30 1978, Place of Birth- Belhvar (Madhubani District), Education: Swami Vivekananda Middle School, Tisco Sakchi Girls High School, Ms KMPM Inter College, IGNOU, ICAI (COST ACCOUNTANCY); Residence- LONDON, UK; Father - Sh. Shubhankar Jha, Jamshedpur; Mother - Smt. Sudha Jha- Shivi pat ti. Jyoti received editor's choice award from www.poetry.com and her poems were featured in front page of www.poetrysoup.com for some period. She learnt Mthila Painting under Ms. Shveta Jha, Basera Institute, Jamshedpur and Fine Arts from Toolika, Sakchi, Jamshedpur (India). Her Mthila Paintings have been displayed by Ealing Art Group at Ealing Broadway, London.



SahasraBarhani :The Corret

translated by Jyoti

When Nand saw the advertisement of the Mahabharata in the television he asked his wife, "Why cannot we see Mahabharata in our TV?" His wife replied, "We only have DD1. Someone in the upper floor could see DD Metro because his son bought him a machine worth 300 rupees. That machine when attached to the TV avails DD Metro channel. Mahabharata is telecasted in that channel. Why don't you buy that machine with your next salary to complement the TV given by our son?"

Nand disagreed, "That will be given by him who gave this TV"

When Aaruni came to know about that he laughed. He arranged the machine in next day and when Nand watched Mahabharata in next week end then everyone was very happy. Aaruni went out of Patna for arms training in that month. Durga Puj a was in that one month's period of training. That was the first time when Aaruni's father had not visited village in Durga Puj a. Aaruni also came



to Patna in a weekend within the festive season of Durga Puj a. It was Sunday. Mahabharata was being telecasted in TV. Aaruni had only one friend. Aaruni was out with him without eating any thing. He returned with his friend. Mother served both of them food.

“Did father have lunch ? ” he asked his mother .

“Yes, it is three o'clock now. He is taking nap after watching Mahabharata and having lunch. I must give him tea otherwise he will not wake up.”

Aaruni couldn't eat more than two three spoon. His friend asked him that what the reason was.

“I don't know. I am not feeling good”, he replied.

“You have to go for training tomorrow so you are worried”, his friend consoled him

“Don't know”.

Meanwhile some sound came from inside and everyone ran towards him

“What happened mother ? ”



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृताम्

“I gave him tea and he is not getting up. Earlier he used to get up as soon as tea time was announced.”

His body was stretched and senseless.

(continued)

महत्त्वपूर्ण सूचना (१): महत्त्वपूर्ण सूचना: श्रीमान् नचिकेत्याजीक नाठक "नो एट्टी: मा प्ररिशि" केव 'रिदेह' मे ङ-प्रकाशित कप देथि कए एकव प्रिठ कपमे प्रकाशिनक नेन 'रिदेह' केव समम्क "श्रुति प्रकाशिन" केव प्रस्तार थायन छन । श्री नचिकेता जी एकव प्रिठ कप कवरक स्र्प्रति दए देनन्हि । प्रिठ कप हार्डरौण्ड (I SBN NO978-81-907729-0-7 मूना क.१२३.१/- यू.एस. डॉनव ४०) थां पेपवर्क (I SBN No.978-81-907729-1-4 मूना क. १३.१/- यू.एस.डॉनव २३.१/-) मे श्रुति प्रकाशिन, १/१, द्वितीय तन, पठेन नगव (प.) नङ्ग दिल्ली-११०००४ द्वावा छापन गेन अछि । 'रिदेह' द्वावा कएन गेन शोधक आधाव पव १.मेथिली-अंग्रेजी शिद्ध कोशि २.अंग्रेजी-मेथिली शिद्ध कोशि श्रुति प्रिनकेशन द्वावा प्रिठ फॉर्ममे प्रकाशित कवरक आग्रह स्त्रिकाव कए नेन गेन अछि । संप्रति मेथिली-अंग्रेजी शिद्धकोशि-खल्द-I -XVI . लेखक-गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र फुमाव ना एरं पङ्गीकाव रिद्यानन्द ना, दाम-क.३.००/- प्रति खल्द । Combined I SBN No.978-81-907729-2-15 e-mail : shruti_publication@shruti-publication.com website: <http://www.shruti-publication.com>

महत्त्वपूर्ण सूचना (२): पङ्गी-प्ररिह रिदेह डाठारैस मिथिनाम्बसँ देरनागवी पाल्दुनिपि निप्यातवण- श्रुति प्रिनकेशन द्वावा प्रिठ फॉर्ममे प्रकाशित कवरक आग्रह स्त्रिकाव कए नेन गेन अछि । पुस्तक-प्राप्तिक रिधिक थां पौथीक मूनाक सूचना एहि पृष्ठा पव शीघ्र देन जायत । पङ्गी-प्ररिह (डिजिटल गमेजिंग थां मिथिनाम्बसँ देरनागवी निप्यातवण)- तीनु पौथीक संकनन-सम्पादन-निप्यातवण गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र फुमाव ना एरं पङ्गीकाव रिद्यानन्द ना द्वावा ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (३): 'रिदेह' द्वावा धावाराहिक कपे ङ-प्रकाशित कएन जा' बहन गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्ररौतनि'(उपन्यास), 'गम्प-गुह'(कथा संग्रह) , 'भानसवि' (पद्य संग्रह), 'रौनाना प्रते', 'एकाङ्गी संग्रह', 'महाभावत' 'रूह चरित' (महाकारा)था 'यात्रा वृत्त' रिदेहमे संपूर्ण ङ-प्रकाशिनक रौद प्रिठ फॉर्ममे । - फुकुम्बेवम् अन्तर्मनक, खल्द-१ थां २ (लेखकक छिड्डी थायन पद्य, उपन्यास, गम्प-कथा, नाठक-एकाङ्गी, रौनाना प्रते, महाकारा, शोध-निर्रह आदिक समग्र संकनन)- गजेन्द्र ठाकुर



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in> मानुषीमिह संस्कृताम्

महत्त्वपूर्ण सूचना (४): "रिदेह" केव २३.५ अंक १ जनरवी २००९, ई-प्रकाशित तँ होएरें कबत, संगमे एकव प्रिंठ संस्करण सेहो निकनत जाहिमे पुवान २४ अंकक छनन बचना सम्विनित कएन जाएत ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (३): सूचना: रिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अंठबनेठपव पहिन रेंव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सरबि खाधारित -Based on ms-sql server Maithili - English and English-Maithili Dictionary. रिदेहक भाषापाक- बचानेखन सुंभमे ।

नर अंक देखरौक नेन पुंठा सभकेँ बिहेशे कए देखु । Always refresh the pages for viewing new issue of VI DEHA.

<p>अंतिका प्रकाशिन की नरीनतम पुस्तकेँ</p> <p>सजिन्द</p> <p>मीडिया, समाज, राजनीति ओव गतिहास</p> <p>डिज्ग अष्टव : मीडिया एन्ड पॉनिटिक्ल: पुण्य प्रसून राजपेयी 2008 मूना क. 200.00</p> <p>राजनीति मेवी जान : पुण्य प्रसून राजपेयी प्रकाशिन ररष 2008 मूना क.300.00</p> <p>पानकानीन संस्कृति : मंजू रुमारी प्रकाशिन ररष 2008 मूना क. 225.00</p> <p>मूनी : संघरष ओव सृजन : श्रीधरम प्रकाशिन ररष 2008 मूना क.200.00</p> <p>अथ निषाद कथा : भरुदेर पालुय प्रकाशिन ररष 2007 मूना क.180.00</p> <p>उपन्यास</p> <p>मोनानीसा हँस बही थी : अशोक</p>	<p>पेपवलेक संस्करण</p> <p>उपन्यास</p> <p>मोनानीसा हँस बही थी : अशोक भौमिक प्रकाशिन ररष 2008 मूना क.100.00</p> <p>कहानी-संग्रह</p> <p>रेन की रात : हविमोहन या प्रकाशिन ररष 2007 मूना क. 70.00</p> <p>छुट्टिया भव छुट्ट : महेश कठारे प्रकाशिन ररष 2008 मूना क. 100.00</p> <p>कोहरे मे कंदीन : अरधेशे प्रीत प्रकाशिन ररष 2008 मूना क. 100.00</p> <p>शेहव की आथिरी चिडिय 1 : प्रकाशि कान्त प्रकाशिन ररष 2008 मूना क. 100.00</p> <p>पीने कागज की उजनी गरौवत :</p>
--	--



मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>

मानुषीमिह संस्कृतम्

<p>भौमिक प्रकाशिन र्ष 2008 मूना क. 200.00</p> <p>कहानी-संग्रह</p> <p>बेन की रात : हबिमोहन मा प्रकाशिन रष 2008 मूना क.125.00</p> <p>छुट्टिया भव छुट्ट : महेश कठारे प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 200.00</p> <p>कोहरे में कंदीन : अरधेशे प्रीत प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 200.00</p> <p>शेहब की आखिरी चिडिय 1 : प्रकाश कान्त प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 200.00</p> <p>पीने कागज की उजनी गरावत : कैनाशि रनरामी प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 200.00</p> <p>नाच के राहब : गौरीनाथ प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 200.00</p> <p>आगस-पागस : अशोक भौमिक प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 180.00</p> <p>हृद भी तो कमाना नहीं : मनीषा हनश्रेष्ठ प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 200.00</p> <p>रडकू चाचा : स्वनीता जैन प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 195.00</p> <p>भेम का भेक मांगता हन्हाड 1</p>	<p>कैनाशि रनरामी प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 100.00</p> <p>नाच के राहब : गौरीनाथ प्रकाशिन रष 2007 मूना क. 100.00</p> <p>आगस-पागस : अशोक भौमिक प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 90.00</p> <p>हृद भी तो कमाना नहीं : मनीषा हनश्रेष्ठ प्रकाशिन रष 2008 मूना क. 100.00</p> <p>भेम का भेक मांगता हन्हाड 1 ग्रामान : सलनावायण पठैन प्रकाशिन रष 2007 मूना क. 90.00</p> <p>शीघ्र प्रकाश</p> <p>आलोचना</p> <p>गतिहास : संयोग ँव सार्थकता : स्वरेन्द्र चौधरी</p> <p>संपादक : उदयशंकव</p> <p>हिंदी कहानी : बचना ँव परिस्थिति : स्वरेन्द्र चौधरी</p> <p>संपादक : उदयशंकव</p> <p>साधारण की प्रतिज्ञा : अंधेरे से साम्नाकोव : स्वरेन्द्र चौधरी</p> <p>संपादक : उदयशंकव</p> <p>रौदन सबकाव : जीरन ँव बंगमंच : अशोक भौमिक</p>
--	---



<p>ग्रामान : सलनावायण पठेन प्रकाशिन रर्ष 2008 मून्य क. 200.00</p> <p>करिता-संग्रह</p> <p>या : शैनेय प्रकाशिन रर्ष 2008 मून्य क. 160.00</p> <p>जीना चाहता हूँ : भोनानाथ रुशिराहा प्रकाशिन रर्ष 2008 मून्य क. 300.00</p> <p>करँ नौठेगा नदी के उम पाव गया खादमी : भोनानाथ रुशिराहा प्रकाशिन रर्ष 2007 मून्य क. 225.00</p> <p>नान बिस्वन का हूनरौ : स्वनीता जैन प्रकाशिन रर्ष 2007 मून्य क.190.00</p> <p>नूँ के रैहान दिना मेँ : स्वनीता जैन प्रकाशिन रर्ष 2008 मून्य क. 195.00</p> <p>हैठेसी : स्वनीता जैन प्रकाशिन रर्ष 2008 मून्य क. 190.00</p> <p>दुःखमय खवाकचकः श्याम टैतन्य प्रकाशिन रर्ष 2008 मून्य क. 190.00</p> <p>रुर्खान करिताई : मनोज रुमाव शीरासुतर प्रकाशिन रर्ष 2008 मून्य क. 150.00</p> <p>मैथिली पोथी</p> <p>रिकास ओ अर्थतंत्र (रिचाव) : नरेन्द्र</p>	<p>रौनग्रह्य भर्षाईत ओव आधुनिक हिदी आनोचना का आर्बन्त : अन्भिषेक रौशिन</p> <p>सामाजिक टिंतन</p> <p>किसान ओव किसानी : अनिन चमडिय ।</p> <p>शिक्षक की डायरी : योगेन्द्र</p> <p>उपन्यास</p> <p>मागफास्काप : बाजेन्द्र रुमाव कनौजिया</p> <p>पृथ्वीपुत्र : ननित अनुराद : महाप्रकाशि</p> <p>मोड पव : धूमकेतु अनुराद : सर्गा मोनाकज्ज : पियेव ना मूव अनुराद : स्वनीता जैन</p> <p>कहानी-संग्रह</p> <p>धूँधनी यादेँ ओव सिसकते जूखम : निसाव अहमद</p> <p>जगधव की प्रेम कथा : हविओम</p> <p>एक साथ हिन्दी, मैथिली मेँ सफिय आपका प्रकाशिन</p>
--	---



<p>मा प्रकाशिन ररष 2008 मून्य क. 250.00 संग समय के (करिता-संग्रह) : महाप्रकाशि प्रकाशिन ररष 2007 मून्य क. 100.00 एक ष्टा हेबायन दुनिया (करिता-संग्रह) : प्ररुमोहन मा प्रकाशिन ररष 2008 मून्य क. 60.00 दकचन देरौन (कथा-संग्रह) : रनबाम प्रकाशिन ररष 2000 मून्य क. 40.00 सम्वरु (कथा-संग्रह) : मानेश्वर मनुज प्रकाशिन ररष 2007 मून्य क. 165.00</p> <p>प्रसुतक मंगराने के निअ मनीखार्डिब/ चेक/ ड्राफ्ट र्थतिका प्रकाशिन के नाम से भेजे । दिनी से रौहब के एठ पाव बैंकिंग (at par banki ng) चेक के खनारा खन्य चेक एक हजाव से कम का न भेजे । क.200/- से ज्यादा की प्रसुतको पब डक र्थ हमावा रहन करेगे । क.300/- से क.500/- तक की प्रसुतको पब 10% की छुठ, क.500/- से डुपब क.1000/- तक 15% ँब डससे ज्यादा की कितारो पब 20% की छुठ राजिगत खरीद पब दी जाएगी ।</p> <p>र्थतिका, मैथिली त्रैमासिक, सम्पादक- खननकात</p> <p>र्थतिका प्रकाशिन,सी-56/यूजीएफ-4, शानीमावगार्डन, एकसठेशिन- II ,गाजियारौद-201005 (ड.प्र.),होन : 0120- 6475212,मोरौगन</p>	<p>र्थतिका प्रकाशिन सी-56/यूजीएफ-4, शानीमाव गार्डन, एकसठेशिन-II गाजियारौद-201005 (ड.प्र.) होन : 0120-6475212 मोरौगन नं.9868380797, 9891245023 अ-मेन: ant i ka1999@yahoo.co.i n, ant i ka.pr akashan@ant i ka- pr akashan.com <a href="http://www.ant i ka-
pr akashan.com">ht t p://www.ant i ka- pr akashan.com</p> <p>(रिज्ञापन)</p>
--	--



नं.9868380797,9891245023,

खाजरीरन सदस्यता शुक्ल भा.क.2100/-
चेक/ ड्राफ्ट द्वारा “अतिका प्रकाशन”
के नाम में पठाऊँ। दिल्ली के राहबक
चेक में भा.क. 30/- अतिविज्ञ
जोड़ूँ।

रिया, हिन्दी डुमाली पत्रिका,
सम्पादक- गौरीनाथ

संपर्क- अतिका प्रकाशन,सी-
56/यूजीएफ-4, शालीमावगार्डन,
एकसठेशीन-II, गजियाराद-201005
(डू.प्र.),फोन : 0120-
6475212,मोरौंगन
नं.9868380797,9891245023,

खाजरीरन सदस्यता शुक्ल क.5000/-
चेक/ ड्राफ्ट/ मनीकार्ड द्वारा “
अतिका प्रकाशन ” के नाम भेजेँ।
दिल्ली में राहब के चेक में 30
कपया अतिविज्ञ जोड़ूँ।



श्रुति प्रकाशनसँ

१. पंचदेरोपासना-भूमि मिथिना-

मौन



२. मैथिली भाषा-साहित्य (२०म

शताब्दी)- प्रेमशंकर सिंह



३. गृजन जतीक बाधा (गद्य-पद्य-
ब्रजबुनी मिश्रित)- गणेश

गृजन



४. रनेत-रिगड़त (कथा-गल्प
संग्रह)-सुभाषचन्द्र यादव



५. कबक्केत्रम् खल्वर्मनक, खल्व-१
खा२ २ (लेखकक छिड्डि खासन पद्य,
उपन्यास, गल्प-कथा, नाटक-एकांकी,
रौनानां ध्रुते, महाकार्य, शोध-निर्बन्ध
खादिक समग्र संकनन)- गजेन्द्र

ठाकुर



६. रिनस्त्रित कजक हगमे निर्बन्ध
(पद्य-संग्रह)- परकज पराशिव



७. हम प्रुष्टेत छी (पद्य-संग्रह)-

+ नो एन्ट्री: मा प्ररिने- डॉ.
उदय नावायण सिंह

“नचिकेतो”



१/१०/११ 'रिदेह' द्वारा कएन गेन शोधक
खाधाव पब १. मैथिली-अंग्रेजी शिद्ध कौशि
२. अंग्रेजी-मैथिली शिद्ध कौशि श्रुति परिवर्तन
द्वारा प्रिन्ट हलर्ममे प्रकाशित कवरक खाग्रह
स्वीकार कए गेन गेन अछि । संप्रति मैथिली-
अंग्रेजी शिद्धकौशि-खल्व-1 -XVI . लेखक-
गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार ना
एवं पञ्जीकाव रिद्यानन्द ना, दाम-

क. ३.००/- प्रति खल्व ।
Combi ned I SBN No.978-81-
907729-2-15 ३. पञ्जी-प्रबन्ध
(डिजिटल अमेजिंग खा२

मिथिनाम्बवसँ देरनागरी

निर्प्यातवण)- संकनन-सम्पादन-

निर्प्यातवण गजेन्द्र ठाकुर
नागेन्द्र कुमार ना एवं पञ्जीकाव



रिद्यानन्द ना द्वारा ।



श्रुति प्रकाशन, बजिस्टर्ड ऑफिस:
एच.१/३१, द्वितीय तन, सेकठव-७३,
नोएडा (यू.पी.), काँवपोरेठ मह
संपर्क कार्यालय- १/१, द्वितीय तन,
पूरी पठेन नगर, दिल्ली-११०००४.
दूरभाष-(०११) २३.४४७३.७-३.१



<p>रिनीत उपेन </p>	<p>फैक- (०९९)२३.११+१७७३.१</p> <p>वेबसाइट: http://www.shruti-publication.com</p> <p>ई-मेल: shruti-publication@shruti-publication.com</p> <p>(रिज्ञापन)</p>
---	--

(८)२००१-०९. सराधिकार लेखकाधीन आ जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन । रिदेह (पाश्चिक) संपादक- गजेन्द्र ठाकुर । एतय प्रकाशित बचना सबक कर्षीबागठ लेखक लोकनिक नगमे बहतछि, मात्र एकब प्रथम प्रकाशिनक/ आर्कागरक/ अंग्रेजी-संस्कृत अनुरादक आ-प्रकाशिन/ आर्कागरक अधिकार एहि आ पत्रिकारकेँ छैक । बचनाकाब अपन मौनिक आ अं प्रकाशित बचना (जकब मौनिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छुनि) ggajendra@yahoo.co.in आकि ggajendra@videha.com केँ मेन अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf रा .txt हार्मेण्टमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्केन कएन गेन फोर्मे पठैताह, से आशि करैत छी । बचनाक अंतमे ठागप बहय, जे आ बचना मौनिक अछि, आ पहिन प्रकाशिनक हेतु रिदेह (पाश्चिक) आ पत्रिकारकेँ देन जा बहन अछि । मेन प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देन जायत । एहि आ पत्रिकारकेँ शीमति नम्बरी ठाकुर द्वारा मासक १ आ १५ तिथिकेँ आ प्रकाशित कएन जागत अछि । (८) २००८

मास १५ अंक २९) <http://www.videha.co.in>



मानुषीमिह संस्कृतम्

संस्थापक स्वयंसेवक । रिदेहमे प्रकाशित सभटा बचना आ आकारिक संस्थापक
बचनाका आ संग्रहकर्ताक नगमे छन्हि । बचनाक खबर आ पुनः प्रकाशिन किंरा
आकारिक उपयोगक अधिकार किनराक हेतु ggajendra@videha.co.in पब
संपर्क कर । एहि सागठके प्रति मा ठाकर, मधुनिका चौधरी आ बग्गि प्रिया द्वारा



डिजाइन कएन गेल ।

सिद्धिबन्धु